ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 30 25 से 31 जुलाई, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 श्रावण कृ.-03

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

हम अपनी संस्कृति को लेकर भ्रमित हैं

भारतीय संस्कृति का मतलब ठहराव या जड़ बने रहना नहीं

— स्वामी अग्निवेश

नव भारत टाइम्स के श्री नरेन्द्र नाथ ने सार्वदिशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी से धर्म तथा संस्कृति जैसे विभिन्न विषयों पर बातचीत की। प्रस्तुत है बातचीत के कुछ मुख्य अंश।

भारतीय संस्कृति को लेकर लोगों में अनेक तरह के भ्रम हैं। दरअसल हमारी संस्कृति विश्ववारा संस्कृति है। यह पूरी मानवता को एक परिवार की तरह मानती है — वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ। यह दूसरी भाषा, धर्म या संप्रदाय के प्रभाव से दूषित नहीं होती। यह बिना ऐसी लकीरें खींचे, सबको समेट कर आगे चलने का आग्रह करती है। यही इस संस्कृति का मूल चरित्र है।

इसका काफी जिक्र हमारे वेदों में मिलता है। यह बेहद प्राचीन संस्कृति है, लेकिन यह किसी भी आधुनिक संस्कृति से ज्यादा प्रोग्रेसिव है। भारतीय संस्कृति का मतलब ठहराव या जड़ बने रहना नहीं है। निरंतर बदलाव और आगे बढ़ने की प्रवृत्ति इसकी आत्मा में निहित है। इसीलिए तो कहा गया है, हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। हर बदलाव, हर नई चीज हमें ज्यादा प्रभावित करती है — चाहे वह कोई नई भाषा हो, कोई नया दर्शन हो या कोई नई पोशाक। यह एक बहुत बड़ी भ्रांति है कि अपनी संस्कृति की रक्षा का मतलब कुछ खास रीति–रिवाजों या माध्यमों को पकड़ कर बैठे रहना है।

हमारी संस्कृति, बदलाव या आनन्द से जीने के खिलाफ नहीं है। बस वह त्याग और कुछ हद तक निरपेक्ष बने रह कर हर काम करने की इजाजत देती है। मूल्यों को सहेज कर सादा जीवन उच्च विचार हमारी जीवन शैली और संस्कृति की बुनियाद को तैयार करता है। दरअसल पश्चिम ने खाओ, पीयो और मौज करो की संस्कृति को अपनाया। इस तरह उसने अपनी मौलिकता को खोने दिया। उसने जीवन मूल्यों से समझौता किया। हम उनमें चकाचौंध पाते हैं और उनकी ओर, उनके जैसा बनने की हसरत के साथ अक्सर अपनी संस्कृति को कुचलने की कोशिश करते हैं।

संस्कृति को किस तरह अक्षुण्ण रखा जाता है, वह हमें आदिवासियों से सीखना चाहिए। विकास के पश्चिमी मॉडल की अंधी दौड़ में हमने उन्हें जंगली कह कर पुकारा। लेकिन प्रकृति को अपना साथी मानने और उसे बचाने के प्रति उनकी निष्ठा के महत्त्व को अब पूरा विश्व समझ रहा है। अपने साईंस के अहंकार से प्रकृति को रौंदते रहने वाला पश्चिमी समाज आज उसे सहेजने की बात करने लगा है। प्रकृति के साथ खेलने और उसे अपनी संस्कृति से अलग करने का भयावह परिणाम हम उत्तराखण्ड की त्रासदी के रूप में देख चुके हैं।

हम अक्सर धर्म को भी गलत अर्थ में परिभाषित करते हैं। हम अपने तीर्थों को बाजार से जोड़ने लगे। अध्यात्म को कर्मकाण्ड से जोड़ने लगे, आडंबर हावी होने लगे तो इसके भयावह परिणाम भी सामने आने लगे। देवभूमि में जो प्राकृतिक त्रासदी आई, वह चेतावनी देकर गई है।

आज जरूरत है भारतीय संस्कृति के मूल को समझने की। सुपरफिशियल तरीके से बात करने से काम नहीं चलेगा। बहुत उलझी हुई बात नहीं है यह। छोटी–छोटी बातों और प्रयास से हमारी संस्कृति की बुनियाद बरकरार रह सकती है। बशर्ते यह राजनीति, क्षेत्र, भाषा और संप्रदाय जैसी छोटी–छोटी सीमाओं से ऊपर उठकर वसुधैव कुटुंबकम की अपनी मूल दृष्टि वापस पा सके।

— नवभारत से साभार

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी का उत्तराखण्ड के राज्यपाल माननीय श्री अजीज कुरैशी जी से उत्तराखण्ड आपदा के सम्बन्ध में गम्भीर विचार–विनिमय

18 जुलाई, 2013 को स्वामी अग्निवेश जी एवं मनु सिंह जी ने उत्तराखण्ड के राज्यपाल माननीय श्री अज़ीज कुरैशी से राजभवन में मुलाकात की। इस दौरान स्वामी जी, श्री मनु सिंह एवं राज्यपाल जी ने लगभग 50 मिनट तक विभिन्न विषयों पर बातचीत की। स्वामी जी ने राज्यपाल जी की सराहना करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड के अफसरों एवं राजनेताओं को उनसे सीख लेकर उन्हीं की तरह (हेलीकाप्टर से नहीं अपितु) सड़क द्वारा यात्रा करनी चाहिये। इसी से उन सबको भी ज़मीनी हकीकत का अच्छी तरह से अंदाजा होगा। उत्तराखण्ड में आयी भीषण आपदा के लिये भी स्वामी जी ने सीधे तौर पर सरकार की नीतियों को जिम्मेदार बताया एवं राज्यपाल जी से इसमें सीधे हस्तक्षेप करने को कहा।

स्वामी अग्निवेश जी ने राज्यपाल जी से इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करने को कहा — एक ऐसा अवसर जिसमें सब लोगों को मिलकर देवभूमि उत्तराखण्ड से 'धर्म के सच्चे स्वरूप' पर बहस छेड़नी चाहिये एवं धर्म को अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, गुरूडम, जादू टोना जैसे ढकोसलों से निकाल कर उसके सच्चे आध्यात्मिक स्वरूप में अपनाना एवं जीना चाहिये। राज्यपाल श्री अज़ीज कुरैशी जी पूर्णतः स्वामी जी की बात से सहमत थे और उन्होंने आगे बढ़कर कहा कि धर्म के साथ साथ राजनीति पर भी इस तरह बहस होनी चाहिये। स्वामी जी ने इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा आपदा में किये गये कार्यों का लेखा जोखा भी राज्यपाल श्री अज़ीज कुरैशी को दिया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

हमारा सर्वस्व – 'ईश्वर, वेद और सृष्टि'

-मनमोहन कुमार आर्य

हम मनुष्य हैं और वेदों ने हमें दो पैर वाला प्राणी कहा है। हमारा शरीर जड़ है जिसमें एक जीवात्मा नाम से जाना जाने वाला चेतन तत्व निवास करता है। हम कहते हैं कि यह मेरी आंख है, यह मेरी नाक है, यह मेरा कान है और यह मेरा हाथ है आदि, इससे ज्ञात होता है कि मैं आंख, नाक, कान व हाथ आदि या मेरा पूरा शरीर 'मैं' नहीं हूं बल्कि इन से भिन्न हूँ। यह शरीर एवं इसमें सभी अंग मेरे अवश्य हैं परन्तु मैं इन सबसे भिन्न हूं। मैं कैसा हूँ तो अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मैं एक चेतन तत्व हूँ जो अत्यन्त सूक्ष्म, नेत्रेन्द्रिय से अगोचर, सत्य, अविनाशी, अजन्मा, अमर, नित्य, अल्पज्ञ, अल्प परिमाण, अणुरूप, एकदेशी, ससीम, शुभ-अशुभ कर्मों का कर्ता व इनके सुख व दुख रूप फलों का भोक्ता हूँ। इस संसार में मेरा जन्म माता व पिता से हुआ है। जन्म धारण करने में मेरी व किसी की भी मर्जी नहीं चलती। यदि जन्म लेने की स्वतन्त्रता होती तो मैं कहीं और व किसी अन्य माता-पिता से जन्म लेता। मुझे जन्म देने वाला माता-पिता से भिन्न अन्य कोई अवश्य है जिसने निर्णय किया कि वर्तमान जीवन के माता-पिता मेरे माता-पिता होगें। फिर प्राकृतिक प्रक्रिया से मेरा जन्म हो गया। मुझे कर्म करने की स्वतन्त्रता है पर मैं फलों के बन्धन में बन्धा हुआ हूँ। अल्पज्ञ व अल्प शक्ति वाला होने से मैं जो कार्य करता हूँ उसमें कमियाँ रह जाती हैं। विद्याध्ययन एवं पुरुषार्थ से मैं अपने कार्यो में दक्षता प्राप्त करता हूँ। ऐसा करके मैं एक सामान्य व्यक्ति बनता हूँ जो अपना निर्वाह अन्यों की तरह सामान्य रूप से या उनसे कुछ उन्नत तरीके से व्यतीत करता हूँ। यह कुछ-कुछ मेरा परिचय है।

हमारी वर्तमान पीढ़ी व सृष्टि की आदि से लेकर अब तक उत्पन्न हुए सभी पूर्वजों व नाना योनियों के जीवधारियों को यह सारा संसार बना बनाया मिला है। हम सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र, नाना ग्रह व आकाशीय छोटे-बड़े पिण्ड, आकाश, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, वन, पर्वत, नदियाँ, समुद्र, अन्न-ओषधियाँ आदि वनस्पतियाँ आदि संसार में देखते हैं जो सभी हमें बनी बनाई मिली हैं। यह सब वस्तुयें किससे प्राप्त हुई हैं?, हम व प्रायः सभी लोग इस पर विचार नहीं करते। हमें लगता है कि सभी मनुष्य रात-दिन केवल अपने-अपने अन्य-अन्य कार्यों में लगे हैं और इस ओर ध्यान ही नहीं जाता। एक कारण यह भी है कि यदि वह इसका उत्तर भिन्न-भिन्न मत के धार्मिक लोगों से पूछते हैं तो उनके उत्तरों से समाधान नहीं होता। वे या तो परम्परागत, अविवेकपूर्ण या असत्य उत्तरों को मान लेते हैं या उसे स्वीकार ही नहीं करते। उनके पास इस बात के लिए समय नहीं हैं कि वह उन विद्वानों की तलाश करें जो इनके सत्य उत्तर जानते हैं। इन सब उत्तरों में से एक उत्तर है कि यह सारा संसार एवं इसकी समस्त वस्तुयें एक परम विशाल, अनन्त, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान चेतन सत्ता ने बनाई हैं। उसे सृष्टि बनाने व चलाने का ज्ञान है और अब तक वह अनन्त बार सृष्टि को बनाकर चला चुका है और यह क्रम अनन्त बार इसी प्रकार से चलेगा। इस सृष्टि के आदि से ईश्वर इसे बना कर चला रहा है। 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की सृष्टि की आयु है। जब यह पूर्ण हो जायेगी तो ईश्वर द्वारा यह सृष्टि प्रलय को प्राप्त हो जायेगी। प्रलय की अवस्था वह अवस्था है जो इस सृष्टि की रचना से पूर्व की, इसकी कारण अवस्था, थी अर्थात् सत, रज व तम की साम्यावस्था। विवेक से यह ज्ञान होता है कि ईश्वर इस सृष्टि को धारण कर रहा है। जब तक वह इसे धारण किए हुए है, यह संसार भली-भांति चल रहा है। ईश्वर की रात्रि के आरम्भ होने पर कि जब वह सृष्टि को धारण नही करता, वह अवस्था प्रलय की होती है। तब सब कुछ नष्ट हो जायेगा। सूर्य, चन्द्र, तारे, सभी आकाशीय पिण्ड व पृथिवीस्थ सभी रचनायें अपने कारण - मूल प्रकृति में विलीन हो जायेगीं।

जिस प्रकार हमारा आत्मा अति-सूक्ष्म है, यह हम सब अनुभव करते है। यह चेतन तत्व, ज्ञान व कर्म स्वभाव वाला है, यह भी हम अनुभव करते हैं। यह इतना सूक्ष्म हैं कि न तो हम स्वयं की आत्मा को देख पाते हैं न अन्य प्राणियों की आत्माओं को जो दैनिक जीवन में माता-पिता, भाई, बहिन, पत्नी व बच्चों के रूप में हमारे सम्पर्क में रहतीं हैं। हमें उनके केवल शरीरों के दर्शन होते हैं और आंखों को देखने पर उसमें आत्मा की चमक दिखाई देती है जो मृतक शरीर की आंखों में नहीं होती। जीवात्मा की अति सूक्ष्मता के कारण उसका आकार प्रकार हमें अपने नेत्रों से दिखाई नहीं देता। चिन्तन करने पर हमें ज्ञान होता है कि ईश्वर भी हमारी आत्मा के कुछ समान सत्य, चित्त, सर्वव्यापी, निराकार, हमारी आत्मा से भी सूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ता है। उसी ने यह संसार बनाया है और वही इसको धारण किए हुए है अर्थात् इसका सर्वोत्कृष्ट रूप से संचालन कर रहा है। यहाँ कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह कहेगा कि यद्यपि वह ईश्वर को देख तो नहीं पा रहा है परन्तु ईश्वर के जिस स्वरूप का उल्लेख किया गया है, उसका होना तर्क की दृष्टि से सिद्ध है और उसका होना असम्भव नहीं है। अब प्रश्न यह है कि कैसे पता चले कि वह वस्तुतः है। यहाँ हम महर्षि दयानन्द का उल्लेख करना चाहते हैं। वह प्रातः व रात्रि समय में समाधि लगाया करते थे। समाधि क्या होती है?, ईश्वर का ध्यान जब स्थिर हो जाता है, टूटता नहीं, अखण्डित रहता है, उस ध्यान की निरन्तरता को समाधि कहते हैं। उन्होंने सम्यक्-ध्यान व समाधि के बारे में अपने ग्रन्थों में लिखा है। उनके अनेक अन्तेवासी बन्धुओं ने उन्हें समाधि लगाये हुए भी देखा था जिसका वर्णन साहित्य में उपलब्ध है। उन्होंने लिखा है कि ईश्वर का ध्यान वा उपासना करने से आत्मा के दुगुर्ण दूर होकर ईश्वर के गुणों के सदृश हो जाते हैं और आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि बड़े से बड़े दुःख के प्राप्त होने पर भी, यह हमारी स्वयं की मृत्यु का दुःख भी हो सकता है, मनुष्य घबराता नहीं है, क्या यह छोटी बात है?उनके जीवन की घटनायें उनके इस वक्तव्य की सत्यता का प्रमाण हैं। योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि ने अनुभव व तर्क, दोनों के आधार पर ध्यान व समाधि एवं योग के अन्य सभी अंगों पर प्रयोग व अभ्यास से सत्य सिद्ध किए जा सकने वाले निष्कर्ष दिये हैं। जब ईश्वर का ध्यान करते हुए उसमें निरन्तरता आ जाती है और साधक घंटों उसमें स्थित व स्थिर रहता है तो उस समाधि के सिद्ध होने पर हृदय में स्थित जीवात्मा में ईश्वर का साक्षात्कार, ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति व ईश्वर के आनन्द का अनुभव जो संसार के सभी सुखों से कहीं अधिक बढ़कर होता है, जीवात्मा को अनुभव होता है। यह साक्षात्कार ऐसा है जैसा कि हम हमने सांसारिक जीवन में वस्तुओं को देखकर, सुनकर, पढ़कर निर्भ्रान्त व संशयरहित ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसके बारे में मुण्डक उपनिषद् के 40 वें श्लोक - 'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।' में कहा गया है कि ईश्वर का साक्षात्कार अथवा अपने आन्तरिक ज्ञान-चक्षुओं से दर्शन हो जाने पर हृदय की सभी गांठें व ग्रन्थियां खुल जाती हैं, सभी संशय मिट जाते हैं, दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं और तब उस परमात्मा जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है, उस में वह जीवात्मा निवास करता है। ईश्वर के साक्षात्कार के बाद जब मृत्यु आती है तब जीव जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होकर मुक्ति में चला जाता है। मुक्ति का लाभ व सुख ऐसा है जिसकी उपमा में कोई सांसारिक सुख या पदार्थ नहीं है। हाँ, यह तो कह सकते हैं कि बड़े से बड़े सांसारिक सुख मुक्ति के सुख की तुलना में हेय व न्यून ही हैं। यह मुक्ति विवेकशील कुछ ही लोगों को प्राप्त होती है। हम यह अनुमान करते हैं कि अतीत में यह मुक्ति योगेश्वर कृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महर्षि दयानन्द सरस्वती, इनसे पूर्व हुए सन्त, ऋषि-महर्षि व योगियों को प्राप्त हुई होगी। प्रत्येक समझदार वा ज्ञानी मनुष्य को वेद मार्ग पर चल कर मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये, ऐसा वैदिक साहित्य के विद्वानों का मत है।

इस विवरण से हम समझते हैं कि आधुनिक, तार्किक व विचारशील माने जाने वाले युवा-वृद्ध बन्धु भी काफी सीमा तक ईश्वर के अस्तित्व व उसके साक्षात्कार के सिद्धान्त व मान्यता से सहमत होगें। यदि उन्हें कहीं कुछ भी शंका है तो हमारा सुझाव है कि वह स्वयं वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं योग का व्यवहारिक प्रयोग करके देख सकते हैं। कुछ दिनों के स्वाध्याय व अभ्यास से उन्हें अनुमान होगा कि ईश्वर, जीवात्मा व ईश्वर के साक्षात्कार की मान्यतायें सत्य व यथार्थ हैं। इस लेख की यहां तक की यात्रा के बाद एक साधक व अध्येता की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा का उत्पन्न होना स्वाभाविक लगता है। उसे यह भी अनुमान हो गया होगा कि ईश्वर ने जब सृष्टि बनाई तो लोगों के कल्याण के लिए उसने कुछ ज्ञान तो आदि मनुष्यों को अवश्य दिया ही होगा अन्यथा वह अपने सभी सांसारिक व्यवहार कैसे करते और ईश्वर का ज्ञानवान व सर्वशक्तिमान होना व्यर्थ सिद्ध होता है। यदि वह ज्ञान नहीं देता तो अनेक पीढ़ियाँ तो बिना किसी धर्म-कर्म का पालन किये ही समाप्त हो जाती और यदि अन्य किसी हेतु से, जो सर्वथा असम्भव है, ज्ञान प्राप्त भी होता तो उसमें भी नाना मत होते और सत्य व असत्य का निर्णय करना कठिन हो जाता। अतः जिज्ञासा उठने पर हमें स्वाध्याय व विवेक से ज्ञात होता कि संसार की सबसे प्राचीन ज्ञान की पुस्तक का नाम वेद है। वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। सौभाग्य से हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ से यह आज भी अपने शुद्ध रूप में उपलब्ध हैं। अब बात आती है कि वेदों के सत्य अर्थ कैसे जाने जायें तो इसके लिए भी हमारे पूर्वजों ने अथक परिश्रम किया और हमें संस्कृत की अष्टाध्यायी-महाभाष्य-निरुक्त-निघण्टु पद्धति दी है जिसका अध्ययन कर कोई भी व्यक्ति स्वयं वेदों के अर्थों को जान सकता है। यदि किसी कारण संस्कृत अध्ययन में परिश्रम नहीं कर सकता है, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती, आचार्य रामनाथ वेदालंकार, पंण्डित विश्वनाथ विद्यालंकार व अन्य आर्य विद्वानों के उपलब्ध वेद भाष्यों से लाभान्वित हो सकता है। हमारा अनुमान है कि सच्चे जिज्ञासुओं को ईश्वर व सृष्टि विषयक सभी प्रश्नों का उत्तर व समाधान प्राप्त हो जायेगा। हमारा सुझाव है कि वेदों के सत्य-अर्थो को जानने के इच्छुक सभी जिज्ञासुओं को पहले सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका व आर्याभिविनय आदि पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिये जिससे उन्हें ईश्वर व सृष्टि आदि के विषय में प्रभूत ज्ञान हो जायेगा। हम अनुभव करते हैं कि वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर सभी अध्येता यह पायेगें कि वेदाध्ययन से उनका जीवन सफल हुआ है। अन्य लोग जो वैदिक साहित्य के सम्पर्क में नहीं आ पाते है, उनकी ऐसी स्थिति होना सम्भव नहीं है।

अब हम सृष्टि पर विचार करते हैं। वेद एवं वैदिक साहित्य उत्तर देते हैं कि परमात्मा ने यह सृष्टि हमारे त्यागपूर्वक उपभोग के लिए बनाई है। ईश्वर को यह ज्ञान था कि जिन मनुष्यों को वह उत्पन्न कर रहा है, उनकी आवश्यकतायें क्या-क्या होगीं?उसने उदर व जिह्वा भी हमें प्रदान की है। जब व्यक्ति कार्य करता है तो थक जाता है और उसे भूख-प्यास लगती है। भूख की निवृत्ति के लिए भोजन व प्यास की निवृत्ति के लिए जल की आवश्यकता होती है। अतः ईश्वर ने जल व नाना प्रकार के भोजन के पदार्थ बनाये हैं। शरीर को ढकने के लिए वस्त्र की आवश्यकता होती है, अतः इसके लिए भी रूई आदि आवश्यक पदार्थ बना कर उसका वस्त्र बनाकर उसे उपयोग करने का ज्ञान भी वेद, हमारी आत्मा, मन व बुद्धि में दिया है। इसी प्रकार शरीर में जो इन्द्रियाँ हैं, उन सबके विषय बनाकर सृष्टि में उपलब्ध करा रखे हैं। यह सृष्टि हमारे शरीर व जीवन के निर्वाह के लिये आवश्यक है। इसका सदुपयोग करना ईश्वर को प्रसन्न करना है और इसका दुरुपयोग करना ईश्वर को नाराज करना है। हम संसार में भी देखते हैं कि हमें किसी से कोई भी वस्तु सदुपयोग के लिए ही दी जाती है। सिपाही को बन्दूक सदुपयोग के लिए दी गई है, यदि वह दुरुपयोग करता है तो अपराधी बन कर सजा पाता है। हमें सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का अल्प मात्रा में उपयोग करना है। परिग्रह योग व ईश्वर प्राप्ति में बाधक है। अतः अनावश्यक परिग्रह से बचना चाहिये। शरीर को स्वस्थ रखते हुए ध्यान-उपासना से ईश्वर को प्राप्त कर ब्रह्मवर्चस को प्राप्त हों और मृत्यु के पश्चात ब्रह्मलोक अर्थात मुक्ति या मोक्ष के अधिकारी बनकर जन्म-मरण के दुःखों से मुक्ति प्राप्त करें।

हमने अपने ज्ञान व अनुभव से यह जाना है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य आत्मा, ईश्वर व सृष्टि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर योग साधनों से ईश्वर का साक्षात्कार करना व मृत्यु तक की अवधि तक जीवन-मुक्त अवस्था का समय व्यतीत कर मृत्यु के पश्चात् जन्म मरण से छुटकर मुक्ति को प्राप्त करना है। ईश्वर के साक्षात्कार व मुक्ति प्राप्ति के यथार्थ साधन यथा ईश्वरोपासन, यज्ञ, सेवा, परोपकार, सत्संग आदि केवल वैदिक धर्म में ही उपलब्ध हैं। इनको जानना व आचरण करना ही हमारे व सभी मनुष्यों के जीवन का सर्वस्व या परम लक्ष्य है। हमारे ऋषि-मुनियों ने ईश्वर प्राप्ति व मुक्ति के मार्ग को ही मनुष्य का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके विपरीत जो मार्ग हैं वह मनुष्य को इस जन्म व परजन्म में सुख, स्मृद्धि व मुक्ति के स्थान पर बन्धन में डालकर दुःखमय जीवन व्यतीत कराते हैं। अतः प्रत्येक समझदार व्यक्ति को गहन विचार व चिन्तन कर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नरत होना चाहिये। यदि इस लेख से किसी को लाभ होता है तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेगें।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोनः 09412985121
E-mail-manmohanarya@gmail.com

जिस प्रकार हमारा आत्मा अति-सूक्ष्म है, यह हम सब अनुभव करते है। यह चेतन तत्व, ज्ञान व कर्म स्वभाव वाला है, यह भी हम अनुभव करते हैं। यह इतना सूक्ष्म हैं कि न तो हम स्वयं की आत्मा को देख पाते हैं न अन्य प्राणियों की आत्माओं को जो दैनिक जीवन में माता-पिता, भाई, बहिन, पत्नी व बच्चों के रूप में हमारे सम्पर्क में रहतीं हैं। हमें उनके केवल शरीरों के दर्शन होते हैं और आंखों को देखने पर उसमें आत्मा की चमक दिखाई देती है जो मृतक शरीर की आंखों में नहीं होती। जीवात्मा की अति सूक्ष्मता के कारण उसका आकार प्रकार हमें अपने नेत्रों से दिखाई नहीं देता। चिन्तन करने पर हमें ज्ञान होता है कि ईश्वर भी हमारी आत्मा के कुछ समान सत्य, चित्त, सर्वव्यापी, निराकार, हमारी आत्मा से भी सूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ता है। उसी ने यह संसार बनाया है और वही इसको धारण किए हुए है

गो–भक्तों व समाजसेवियों का स्वागत

वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास के द्वारा गो–भक्तों और सामाजिक क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को शाल उढ़ाकर प्रशस्तिपत्र व वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विष्णुमित्र वेदार्थी ने बताया कि गाय का दूध अमृत के समान है। इसका उपयोग करना चाहिए। इन्होंने बताया कि गाय के पूरे जीवन काल में लाखों व्यक्ति तृप्त होते हैं और माँस से केवल सैकड़ों व्यक्ति इसलिए गाय के दूध से बनी चीजों का ही प्रयोग करें। इसका प्रयोग करने से ही उसकी माँग बढ़ेगी और यही गाय की सच्ची सेवा है। इस अवसर पर न्यास के उपाध्यक्ष आदित्य प्रकाश गुप्ता ने कहा कि न्यास के द्वारा अपनी वैदिक संस्कृति के उत्थान के कार्यक्रम सदा चलते रहेंगे। कार्यक्रम में गो–हत्या पर चिंता व्यक्त की गई। सरकार से माँग की गई कि गो–हत्यारों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाये। सम्मानित व्यक्तियों में यमुना नगर निवासी पं. ओम प्रकाश वर्मा, बिजनौर निवासी आचार्य विष्णु वेदार्थी, नकुड़ निवासी चन्द्रशेखर मित्तल, रणदेई से चौधरी हरिपाल, नकुड़ से संजीव, सहारनपुर शिवसेना जिलाध्यक्ष योगेन्द्र सिरोही, झैरोली से कुलदीप उर्फ पप्पू, कुतुबपुर से शिवकुमार जोशी, सरसावा से प्रवीण आर्य, नरयाली से लालसिंह, सरसावा से जयप्रकाश शर्मा, लखनौती से नीरज रोहिला, कुतुबपुर से सुभाष आदि शामिल रहे।

– वेदभूषण गुप्त, खेड़ा अफगान, सहारनपुर

ईरान का रूहानी दौर

— अखलाख अहमद उस्मानी

ईरान के राष्ट्रपति हसन रूहानी

चॉकलेट–बिस्कुट के बेहद शौकीन बारह साल के हसन रूहानी ने दो सपने देखे थे। देश की बागडोर संभालने और बेहतरीन फुटबॉल खिलाड़ी बनने के। फुटबॉल तो कहीं छूट गया, लेकिन चौंसठ साल की उम्र में हसन रूहानी ईरान के राष्ट्रपति बनने में जरूर सफल हो गए। शालीन, उदार, इस्लामी फ़िक़ (न्यायशास्त्र) के ज्ञाता और छह जुबानों के माहिर डॉ हसन फिरयदून रूहानी को ईरान की जिम्मेदारी तब मिली है जब देश संकट से गुजर रहा है। अरब के अपने ही घर में पराए बेटे जैसा सलूक झेल रहे ईरान के सामने बिखरते दोस्त, कमजोर आर्थिक स्थिति, बेरोजगारी, अमेरिकी और यूरोपीय प्रतिबंध ही मुश्किलें नहीं, रूहानी को फारस की खाड़ी, अरब सागर से लेकर भूमध्य, अंध और कैस्पियन सागर तक वर्तमान पहुंच को बनाए रखना है। रूस, चीन, भारत, वेनेजुएला और क्यूबा जैसे हमदर्द देशों से संबंध और प्रगाढ़ करने हैं और इसी बीच कहीं भुगतान असंतुलन को दूर कर तेल बेच कर रोटी का इंतजाम करना है।

रूहानी परमाणु मसले पर पश्चिम से संबंध मधुर बनाने और बेरोजगारी मिटाने के मुद्दे पर चुनाव जीत कर आए हैं। यह कहा जा सकता है कि अहमदीनेजाद की नीतियों के सविनय विरोध का फायदा रूहानी को मिला है। लेकिन इस विरोध ने उन्हें रोजगार के नए अवसर खोजने, अमेरिकी और यूरोपीय प्रतिबंधों के बीच से कहीं रास्ता निकालने और सीरिया पर संभावित हमले पर व्यापक सोच की बड़ी चुनौतियों से जोड़ दिया है। रूहानी अहमदीनेजाद से ज्यादा चुनौतीपूर्ण स्थिति में आ गए हैं। उन्हें कठमुल्लाओं को ही खुश नहीं रखना है बल्कि देश के सामने व्यावहारिक जरूरतों को पूरा करने का उद्यम भी करना होगा। कहा जा सकता है कि हसन रूहानी पर ईरान की रूहानी से ज्यादा जिस्मानी जरूरतों को पूरा करने की उम्मीदों का बोझ है।

ईरान में शाह के खिलाफ इस्लामी क्रांति में हसन रूहानी के पूरे परिवार ने भाग लिया था। रूहानी सिमनान के रहने वाले हैं। वर्ष 1960 में उन्होंने इस्लामी शिक्षा लेना प्रारंभ किया। शिया इस्लामी शिक्षा के बड़े धर्मगुरुओं मुहम्मद मोहगिग, मुर्तजा हायरी, मुहम्मद रजा और मुहम्मद फजल लनकरानी आदि से उन्होंने इस्लामी तालीम और फ़िक़ (इस्लामी न्यायशास्त्र) की पढ़ाई की। तेहरान विश्वविद्यालय से कानून की स्नातक डिग्री, ग्लासगो विश्वविद्यालय, स्कॉटलैंड से एम. फिल. और यहीं से 1999 में मनोविज्ञान में डॉक्टरेट की डिग्री ली। उनकी पी.एच.डी. के विषय से हम समझ सकते हैं कि वे इस्लामी न्यायशास्त्र को कल्याण से जोड़ कर देखते हैं। 'ईरान के तर्जुबे के संदर्भ में शरिया कानून का लचीलापन' विषय पर शोध करने वाले हसन रूहानी के हाथ वाकई वह लम्हा आ गया जब उन्हें शरिया पर चल रहे इस धर्मतंत्र आधारित इस्लामी गणतंत्र की चुनौतियों से पार पाना है। फारसी के अलावा अरबी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच और रूसी जुबान के माहिर हसन रूहानी कभी दुभाषिये का इस्तेमाल नहीं करते। मुश्किल यह है कि रूहानी का मुल्क सबकी बोली समझ लेता है, लेकिन अपनी बोली समझा नहीं पाता।

कट्टर शिया चिंतक इस बात को लेकर चिंतित हैं कि हसन रूहानी को अमेरिका और यूरोप का अधिकांश मीडिया उदार और सुधारवादी क्यों कह रहा है?कहीं 'सुधारवादी' शब्द के पीछे अमेरिकी चाल तो नहीं?लेकिन यह भी समझना जरूरी है कि ईरान के सर्वोच्च सत्ताधीश अली खामनेई और अहमदीनेजाद के एजेंडे के विरोध के बावजूद ईरान की आठ करोड़ जनता ने उन्हें राष्ट्रपति के तौर पर चुना। किन लोगों से मुकाबला कर रूहानी जीते हैं अगर यह जानेंगे तो ईरान की जनता के मिजाज को भांपा जा सकता है। तेहरान के कट्टर शिया मेयर मुहम्मद बाकर कालीबाफ देश की सर्वोच्च राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सचिव और परमाणु वार्ताकार सईद जलीली, ईरानी सेना के पूर्व प्रमुख मोहसिन रिजाई, खामनेई के खासमखास पूर्व विदेशमंत्री अली अकबर विलायती और निर्दलीय मुहम्मद गराजी।

रूहानी को पसंद किए जाने के पीछे उनकी आर्थिक सुधारवाद की मंशा और अतिराष्ट्रवाद से विमोह है। पिछले यानी 2009 के चुनाव के दौरान अहमदीनेजाद की नीतियों का विरोध करने वाले मीर हुसैन मुसावी और मेहदी करूबी को पिछले चार साल से घर पर नजरबंद कर रखा गया है। अहमदीनेजाद के खिलाफ चलाए गए मीर हुसैन मुसावी के 'ग्रीन मूवमेंट' में हसन रूहानी भी हिस्सा लेते रहे हैं, लेकिन अपनी शालीनता की वजह से उन्हें आक्रामक नहीं माना जाता। उम्मीद की जानी चाहिए कि हसन रूहानी के आने के बाद दोनों नेताओं की नजरबंदी समाप्त की जाएगी। परमाणु कार्यक्रम पर अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आइएइए) से देश के प्रतिनिधि के तौर पर कई बार चर्चा कर चुके हसन रूहानी मानते हैं कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण और ऊर्जा जरूरतों के लिए है, जो किसी भी संप्रभु देश का हक होता है। वे हमेशा इस बात की वकालत करते रहे हैं कि ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर पारदर्शिता बरती जा रही है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि ईरान अपने यूरेनियम संवर्धन को टाल दे।

चुनाव जीतने के बाद हसन रूहानी ने प्रेस वार्ता में कहा कि सीरिया संकट का हल वहाँ की जनता को करना है। रूहानी के बयान की तारीफ करते हुए ब्रिटेन के पूर्व विदेशमंत्री जैक स्ट्रॉ ने आशा जाहिर की है कि रूहानी के आने से क्षेत्र में शांति बहाली में मदद मिलेगी। रूहानी का मत है कि सीरिया में शांति बहाली के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 51 और क्षेत्रीय देशों (अरब) के साथ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया जाए, सीरिया में शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव करवाए जाएं। तभी वहाँ शांति लौट सकती है। रूहानी सीरिया के मुद्दे पर आक्रामक होने के बजाय बड़ी लकीर खींच रहे हैं, जिसके पार जाने से अमेरिका को अपनी विश्वसनीयता खोने का डर रहेगा। सीरिया के मुद्दे पर जी–8 के सम्मेलन में पुतिन के कड़े रुख की वजह से कैमरन और बराक ओबामा पीछे हटे हैं। सीरिया के मामले में पुतिन की मुखरता से बेशक रूहानी को राहत मिली होगी। ईरान से राजनीतिक और आर्थिक विरोध के बावजूद अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को आशा है कि हसन रूहानी के आने से ईरान की समस्याएं कम होंगी।

सारा दोष अमेरिका का है तो ईरान की राजनीतिक कुशलता को क्या हो गया?सर्वोच्च नेता के फैसलों का विरोध करना एक धर्मतंत्र में मुश्किल हो सकता है, लेकिन लोकतंत्र में नहीं। रूहानी को तय करना होगा कि ईरान पहले इस्लामी गणतंत्र राष्ट्र है या जनतांत्रिक इस्लामी राज्य?वे अहमदीनेजाद की नीतियों पर ईरान को आगे नहीं बढ़ा सकते।

रुहुल्लाह खुमैनी की 1989 में मौत के बाद सर्वोच्च नेता के पद पर बैठे अली खामनेई की उम्र भी तिहत्तर साल है। चौबीस साल से सर्वोच्च नेता के तौर पर उनका भी अनुभव है कि ईरान पिछले दो साल में जितना आर्थिक रूप से कमजोर हुआ है उतना तो 1989 से 2010 तक नहीं हुआ था। थकान से भरपूर अली खामनेई को भी रूहानी एक उम्मीद देते हैं। एक ऐसा देश जो अपने मानव संसाधन, उत्पादन, खनिज और ज्ञान से चोटी पर हो सकता है, पर वह रोटी को ही तरस जाए तो कोई बुनियादी कमी जरूर है। सारा दोष अगर अमेरिका का है तो ईरान की राजनीतिक कुशलता को क्या हो गया?सर्वोच्च नेता के फैसलों का विरोध करना एक धर्मतंत्र में मुश्किल हो सकता है, लेकिन लोकतंत्र में नहीं।

रूहानी को तय करना होगा कि ईरान पहले इस्लामी गणतंत्र राष्ट्र है या जनतांत्रिक इस्लामी राज्य?वे अहमदीनेजाद की नीतियों पर ईरान को आगे नहीं बढ़ा सकते। ईरान की मुद्रा पिछले दो साल में साठ प्रतिशत तक गिरी है और अमेरिकी घेराबंदी से वह वस्तु विनिमय के लायक भी नहीं रह गया। रूहानी पूरी कोशिश करेंगे कि अमेरिका से वार्ता करें लेकिन यूरोपीय संघ तक पहुंच बनाने में फौरी तौर पर आसानी है। फ्रेंच और जर्मन भाषा के ज्ञान, मुसलिम उलमा का रूप और चेहरे पर विनम्रता की अपनी निजी विशेषताओं पर रूहानी विश्वास कर सकते हैं कि रास्ते खुलेंगे। अभी अरबी और अंग्रेजी जुबानें उनकी इतनी मदद नहीं कर पाएंगी। वे जल्द ही फ्रांस की यात्रा कर सकते हैं। यूरोप में जर्मनी भी ईरान के लिए एक उम्मीद है। तेल निर्यात और दवाइयाँ और खाद्य आयात ईरान की तात्कालिक जरूरतें हैं।

इस्लामी राष्ट्र संगठन (ओआईसी) के उसके पड़ोसी पाकिस्तान और अफगानिस्तान भी अमेरिका की मर्जी के खिलाफ न ईरान से बिजली खरीद सकते हैं और न ही ईरान को बदले में गेहूँ और दवाइयाँ दे सकते हैं। ईरान शिया राष्ट्र है, लेकिन हर वह इस्लामी देश जो खुद को सुन्नी राष्ट्र कहता है दरअसल वह वहाबी देश है। इन कथित सुन्नी देशों की वहाबियत उन्हें दो चीजें और सिखाती हैं। अमेरिका का विरोध मत करना और ईरान का जरूर विरोध करना। पिछले चौबीस सालों से इस्लाम में इत्तहाद का सपना देख रहे अली खामनेई को भी रूहानी जगाने की कोशिश करेंगे कि वहाबियत का शिया से मेल नहीं हो सकता। सुन्नी राष्ट्र कोई बचा ही नहीं, जिसकी तरफ देखा जाए। तो फिर किसकी तरफ देखा जाए?रूस और चीन महाशक्ति की श्रेणी में, वेनेजुएला और क्यूबा समर्थक देशों की सूची में और भारत, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका तटस्थ देशों की सूची में। इस्लामी तंत्र से बाहर जाकर ही ईरान को उम्मीदें हैं। भौगोलिक रूप से जो देश ईरान के जितना करीब है वह रूहानी और वैचारिक तौर पर उतना ही ईरान के खिलाफ है।

अहमदीनेजाद के भारत पर न्योछावर होने के बावजूद भारत अमेरिकी आर्थिक प्रतिबंधों की वजह से ईरान से तेल आयात घटाता रहा है। विदेशमंत्री सलमान खुर्शीद की हालिया बगदाद यात्रा के दो मायने निकाले जा सकते हैं। हम ईरान का तेल नहीं लेते हैं तो यह हिस्सा सऊदी अरब को नहीं जाना चाहिए। सऊदी अरब की भारत को मानव विकास में मदद के नाम पर वहाबियत को प्रश्रय देने की नीति को भारत सरकार समझ रही है। तेल के लिए सऊदी अरब पर निर्भरता कम करके ही भारत में उसके वहाबी एजेंडे को काटा जा सकता है, लेकिन ईरान का संकट तो तब भी बरकरार है।

हसन रूहानी सोरखेह, सिमनान के रहने वाले हैं। वही सिमनान जहाँ के राजा मखदूम जहांगीर अशरफ ने चौदहवीं शती में बादशाही छोड़कर फकीरी अख्तियार कर ली और खुदा की राह में जो निकले तो भारत में उत्तर प्रदेश के वर्तमान आंबेडकर नगर के कस्बा किछौछा में डेरा डाला। सात सौ साल बाद भी मानवता और प्रेम की उनकी जलाई ज्योति से लोग लाभान्वित हो रहे हैं। उनका परिवार सात सौ सालों से चिश्तिया परंपरा और सूफीवाद को प्रगाढ़ बनाता आया है। इसी किछौछा में आज भी दुनिया भर के लाखों जायरीन आते हैं और वे हजरत जहांगीर मखदूम अशरफ 'सिमनानी' के नाम से उन्हें पुकारते हैं।

इस परिवार से वर्तमान गद्दीनशीन मौलाना सैयद महमूद अशरफ और मौलाना सैयद मुहम्मद अशरफ ने पूरे भारत में वहाबियत के विरुद्ध बड़ा आंदोलन चला रखा है। सिमनान का यह परिवार जानता है कि जिस आग में पाकिस्तान, सीरिया, इराक, अफगानिस्तान, माली, लीबिया, ट्यूनिसिया, मिस्र, फिलस्तीन, लेबनान जले, उस आग से भारत को कैसे बचाना है?जो खेल सऊदी अरब मुसलिम जगत में खेल रहा है उससे या तो ईरान सुरक्षित है या फिर भारत। लेकिन कितने दिन?ईरान का तख्तनशीन बादशाह भारत की मिट्टी में फकीर बन गया। ये रूहानी संबंध आज भी दोनों देश समझते हैं। आज क्या हसन रूहानी को तेहरान से दिल्ली का रास्ता मुश्किल लगता है?सात सौ साल पहले सिमनान से किछौछा का रास्ता तो आसान था।

— जनसत्ता से साभार

केदारनाथ और पंचकेदार के रूप में विराजमान है महादेव

महर्षि दयानन्द ने वैदिक मान्यताओं पर आधारित सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक शिव की सच्ची उपासना सिखाई थी पर पाखण्ड पूजक पौराणिक धर्माचार्यों ने शिव के अनेकानेक मनगढ़न्त रूप गढ़कर ठगी की दुकानें चमका रखीं हैं। जब केदारनाथ का विश्व प्रसिद्ध शिव खुद अपनी रक्षा नहीं कर पाया और पिछले डेढ़ महीने से शव के रूप में मलवे में दबा पड़ा है तो ये बाकी के छुटभय्ये शिव किसकी और कैसी रक्षा करेंगे?हम भोले–भाले श्रद्धालुओं का दिल नहीं दुखाना चाहते पर उनके प्रति गहरी संवेदना की वजह से हम यह सवाल उठा रहे हैं — हमें आपकी प्रतिक्रिया चाहिए — ई मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in अथवा सार्वदेशिक सभा, 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर। आइये मिलकर ईश्वर उपासना सही पर चेतना जगायें। — सम्पादक

देहरादून। देवलोक उत्तराखण्ड शिव का परम धाम है। यहाँ केदारनाथ और पंच केदार के रूप में स्वयं महादेव विराजमान हैं। हर साल लाखों भक्त देश–विदेश से यहाँ आते हैं। हालांकि इस वर्ष की यात्रा का बड़ा समय आपदा से प्रभावित हुआ है। बावजूद इसके शिवशक्ति के प्रति शायद ही किसी की आस्था में कमी आई हो। हर–हर महादेव और ओम् नमः शिवाय के जयकारे यहाँ चारों ओर सुनाई देते हैं। यही कारण है कि 22 जुलाई से शुरू हो रहे सावन में प्रत्येक सोमवार के पवित्र मौकों पर उत्तराखण्ड के हरेक शिव मंदिर में विशेष रूप से भक्तों का एक बार फिर तांता लगने वाला है। कई जगह मेले लगेंगे। कई जगह लोकगीत गुनगुनाए जायेंगे। राज्य में कहां–कहां हैं शिव के प्रेरणास्पद धाम बता रहे हैं। शैलेन्द्र सेमवाल।

पंच केदार

जनुश्रुति है कि पांडवों पर महाभारत के बाद सम्बन्धियों और गुरु हत्या का पाप लगा। आत्मग्लानि से भरे पांडवों ने शिव से दर्शन देने की कामना की। लेकिन शिव दर्शन देने को इच्छुक नहीं थे। पांडवों से पीछा छुड़ाने के लिए शिव केदारनाथ (3584 मीटर) पहुँचे।

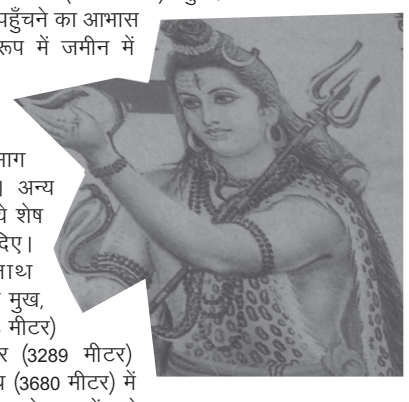

जहाँ पांडवों के पहुँचने का आभास होते वह बैल रूप में जमीन में समा गए। उस स्थान से पृष्ठ भाग को छोड़कर शेष भाग लुप्त हो गया। अन्य चार स्थल पर ये शेष भाग दिखाई दिए। इनमें रूद्रनाथ (2286 मीटर) में मुख, कल्पेश्वर (2134 मीटर) में जटा, मद्देश्वर (3289 मीटर) में नाभि, तुंगनाथ (3680 मीटर) में भुजाएँ और हृदय के रूप में पूजे जाते हैं। यही पंच केदार हैं।

देहरादून : मुख्य शहर से पाँच किलोमीटर दूर गढ़ी कैंट में टपकेश्वर महादेव गुफा के भीतर बने मंदिर में शिवलिंग के ऊपर प्राकृतिक रूप से जल टपकता रहता है। माना यह भी जाता है किसी जमाने में इसकी जगह दूध टपकता था। यहाँ शिवरात्रि का मेला लगता है। लाखामंडल मसूरी से 76 और चकराता से 55 किलोमीटर दूर लाखामंडल में शिव का प्राचीन मंदिर और स्फटिक शिवलिंग आर्कषण का केन्द्र है। पुरातात्विक महत्त्व के लाखामंडल में अभी तक सैकड़ों शिवलिंग मिल चुके हैं।

अल्मोड़ा : मुक्तेश्वर–नैनीताल से 52 किलोमीटर दूर मुक्तेश्वर 2286 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

अन्य मंदिर : उत्तरकाशी में काशी विश्वनाथ मुस्यारी में पौराणिक गुफा मंदिर कपिलेश्वर महादेव, कीर्तिनगर में बिल्व केदार, लैंसडाउन में ताड़केश्वर महादेव, सतपुली में दंदलेश्वर महादेव, बागेश्वर में गौरी उडियार, नीलेश्वर महादेव, वानी महादेव मंदिर अल्मोड़ा के नंदा देवी सेंचुरी क्षेत्र में उध्योवंदेश्वर मंदिर देहरादून में पृथ्वीनाथ महादेव मंदिर, जंगम शिवालय, नागेश्वर मंदिर गढ़ीकेट, रायपुर शिवालय, शिवमंदिर बावड़ी राजपुर में सावन में जल चढ़ाने वालों का तांता लगा रहता है।

— देहरादून हिन्दुस्तान से साभार

ये मंदिर भी हैं आस्था के केन्द्र

पिथोरागढ़ : पाताल भुवनेश्वर, चौखुरी से 35 किलोमीटर दूर है, इसका पौराणिक महत्त्व है। थल केदार पिथोरागढ़ से 25 किलोमीटर दूर है यहां शिवरात्रि का मेला लगता है।

पौड़ी

क्यूंकालेश्वर मंदिर को आठवीं सदी का बना मंदिर माना जाता है। विनसर महादेव पुरातात्विक महत्त्व का शिव मंदिर समुद्र तल से 2480 मीटर ऊँचाई पर है।

नीलकंठ महादेव ऋषि से सड़क मार्ग से 38 और पैदल दूरी में 12 किलोमीटर दूर नीलकंठ के पौराणिक शिव मंदिर में सावन के पूरे महीने उत्सव जैसा माहौल रहता है। यूपी, हरियाणा के शिव भक्त कांवड़िए गंगाजल चढ़ाने पैदल ही पहुँचते हैं।

बागेश्वर

गोमती, सरयू नदी के किनारे बागेश्वर मंदिर समुद्रतल से 960 मीटर ऊँचाई पर है यहां शिवरात्रि का मेला लगता है।

बैजनाथ बागेश्वर से 25 किलोमीटर दूर गोमती के किनारे बैजनाथ मंदिर 12, 13वीं सदी और कत्यूरी शैली का मंदिर है।

हरिद्वार

कनखल में मौजूद दक्ष महादेव और सती कुंड मंदिर का पौराणिक महत्त्व है। दक्ष प्रजापति द्वारा न बुलाए जाने पर शिव आराध्या यहाँ सती हुई थी। यहां सावन का मेला भी लगता है। यहीं पर नीलेश्वर, तिलाभांडेवर, बिल्वकेश्वर महादेव, दरिद्र भंजन मंदिर में कांवड़िए गंगा जल चढ़ाने बड़ी संख्या में आते हैं।

रुद्रप्रयाग

गुप्तकाशी में पांडवों से बचते हुए भगवान शिव ने गुप्त रूप से निवास किया था। यहीं पार्वती का भी मंदिर है। यहां दोनों ने बाणासुर की बेटी ऊषा को संगीत का नृत्य की शिक्षा दी।

अन्धविश्वास का व्यापार बन्द होने पर ही मिलेगी उत्तराखण्ड के मृतकों की आत्मा को शान्ति

— स्वामी अग्निवेश

केदारनाथ समेत उत्तराखण्ड में आई प्राकृतिक आपदा के एक माह बाद प्रदेश में श्रद्धांजलि सभाओं का तांता लगा हुआ है। हरिद्वार में हरकी पैड़ी पर आयोजित महाश्रद्धांजलि सभा में मुख्यमंत्री विजय बहुगणा समेत प्रदेश के प्रमुख राजनैतिक नेताओं और धर्माचार्यों ने उपस्थित होकर मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना तथा तर्पण किया।

इस कृत्य पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह तथाकथित महन्त और धर्माचार्य पहले तो धर्मभीरू जनता को गुमराह करके धार्मिक स्थानों पर बुलाते हैं और दुर्घटना घट जाने के बाद हजारों व्यक्तियों की मौत का तमाशा बनाते हैं। स्वामी जी ने कहा कि धार्मिक अन्धविश्वास और पाखण्ड के कारण अनेकों आपदायें भोली–भाली जनता कई बार झेल चुकी है। लेकिन राज–मठ और सेठ का यह गठजोड़ नकली आँसू बहाकर ढोंग व्यापार में लगा हुआ है।

स्वामी जी ने सवाल उठाया कि उत्तराखण्ड की इस भीषण त्रासदी के समय जब हजारों लोग मौत के आगोश में समा रहे थे तब यह महन्त कहाँ थे। आज एक माह से अधिक होने के बाद भी उत्तराखण्ड के गाँवों में जीवित बचे हजारों परिवार अपना सब कुछ गंवा चुके ग्रामवासी भूखों मर रहे हैं और यह महन्त अपने मंदिरों में अथाह धनराशि पर कुण्डली मारकर बैठे हुए हैं क्यों नहीं वह धन इन लुटे–पिटे लोगों पर व्यय किया जा रहा है। आखिर यह पैसा किस कार्य के लिए एकत्रित किया जा रहा है, क्यों नहीं वह पैसा उत्तराखण्ड के निर्धन निवासियों पर सुनियोजित ढंग से खर्च कर उनको समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए उपयोग किया जा रहा है। स्वामी जी ने कहा कि यह करोड़ों की धनराशि श्रद्धालु भक्तों से प्राप्त की गई है उसको खर्च करने का इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता है।

स्वामी जी ने तथाकथित धर्माचार्यों से अपील की है कि वे दिखावटी आँसू न बहाकर इन पीड़ितों की सेवा करके उनका पुनर्वास करके समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करें।

स्वामी जी ने राजनेताओं से प्रश्न किया कि त्रासदी के एक माह बाद भी प्रभावित गाँवों में पीड़ितों के पास कोई सरकारी सहायता नहीं पहुँच रही है। आज भी सैकड़ों शव मलवे में जगह–जगह दबे पड़े हैं। सूत्रों के अनुसार कई स्थानों पर आपदा पीड़ित आज भी

फंसे हुए हैं सरकार इन सबको राहत पहुँचाने की जगह श्रद्धांजलि सभा में आँसू बहा रही है। स्वामी जी ने कहा कि मृतकों की आत्मा को शान्ति तो तब मिलेगी जब उत्तराखण्ड के हजारों पीड़ितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जायेगा और उन्हें यह विश्वास दिलाया जायेगा कि भविष्य में ऐसी हृदयविदारक घटना नहीं होगी।

मूर्ति पूजा से हानियाँ

— हरबंस लाल चोपड़ा

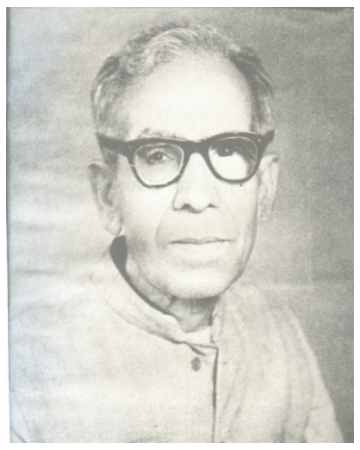

एक बात स्पष्ट है कि मूर्तिपूजा की प्रथा नहीं है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री पं. जवाहरलाल जी नेहरू ने अपनी पुस्तक 'हिन्दुस्तान की कहानी' में लिखा है :–

''यह एक मनोरंजक बात है कि मूर्तिपूजा भारत में यूनान से आई। वैदिक धर्म हर प्रकार की मूर्ति तथा प्रतिमा पूजा का विरोधी था। वैदिक काल में देव मूर्तियों के किसी प्रकार के मन्दिर नहीं थे। बाद के सम्प्रदायों में कुछ–कुछ मूर्तिपूजा के चिन्ह पाए जाते हैं। इस पर भी यह बात पूरे जोर के साथ कही जा सकती है कि मूर्तिपूजा का बहुत व्यापक प्रभाव नहीं था। आरम्भ का बौद्धमत भी इसका घोर विरोधी था और बुद्ध की मूर्ति बनाने की मनाही के बारे में विशेष आदेश थे। यूनानी मूर्तिकला का असर अफगानिस्तान और सरहदी प्रान्त के चारों तरफ अधिक था और धीरे–धीरे वह भारत में प्रवेश कर गया। किन्तु फिर भी आरम्भ में बुद्ध की मूर्तियाँ न बनाकर यूनान के देवताओं जैसी बुद्ध से पहले बौद्ध अवतार की मूर्ति बनाई गई। और बाद में बुद्ध की मूर्ति भी बनाई जाने लगी। हिन्दू धर्म के कुछ सम्प्रदायों ने भी उनकी नकल की, किन्तु वैदिक धर्म इससे प्रभावित नहीं हुआ। फारसी और उर्दू में मूर्ति के लिए जो शब्द बुत प्रयोग में आता है, वह बुद्ध का ही अपभ्रंश है''। हिन्दू धर्म के भिन्न–भिन्न सम्प्रदायाओं में मतभेद होते हुए भी एक बात पर सब सहमत है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और सब धर्मों का आदि स्त्रोत है। आज हम भगवान् राम और कृष्ण की मूर्तियाँ ईश्वर के समान पूजते हैं। उनके जीवन–चरित्रों में कहीं भी इस बात का वर्णन नहीं मिलता कि वह किसी देवता की मूर्ति की पूजा करते थे, अपितु वह तो संध्या यज्ञादि धर्म करके अपना जीवन सफल बनाते थे। फिर न जाने हम इस नए जमाने का समर्थन करके उनके अनुयायी कैसे कहला सकते हैं। मूर्तिपूजा के पक्ष अथवा विरोध में कुछ न कहते हुए हम आपके सामने वह हानियाँ उपस्थित करते हैं जो मूर्तिपूजा के कारण हमें उठानी पड़ती है।

मूर्तिपूजा का मन कभी एकाग्र नहीं हो सकता। आप कहेंगे यह कैसे मूर्तिपूजकों का एक भाग जो सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव से यह मानने लग गया है कि परमात्मा की मूर्ति नहीं बन सकती अवश्य, किन्तु मन को एकाग्र करने के लिए किसी निशाने की आवश्यकता होती है। परमात्मा तो दिखाई नहीं देते, अतः मूर्ति के द्वारा हम मन के एकाग्र करने का अभ्यास कर सकते हैं। किन्तु इस युक्ति में कोई जान नहीं है। हमारा मन कभी उसके सुनहरी मुकुट की ओर जाता है, कभी उसके गोटा किनारी वाले कपड़ों की ओर लपकता है, कभी उसके कानों के कुण्डलों को निहारता है और कभी आँखों के काजल को देखता है। कभी उसके किसी अंग को देखकर कारीगर की प्रशंसा करता है और कभी उसके दूसरे अंग को देखकर कारीगर की निन्दा करता है। और मन्दिर के शंख और घड़ियाल कभी मन को लगने भी नहीं देते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि मूर्ति के कारण मन स्थिर होने के स्थान पर उसकी चंचलता बढ़ती है। सांख्य दर्शन का कहना है, 'ध्यानं निर्विषयं मनः' ध्यान का एकमात्र साधन यही है कि मन विषय रहित हो। जहाँ पाँचों ज्ञान इन्द्रियों के विषय कान का विषय शब्द, आँख का विषय रूप, त्वचा का विषय स्पर्श, वाणी का विषय रस तथा नाक का विषय गन्ध विद्यमान है, वहाँ ध्यान कैसे लग सकता है और मूर्ति के द्वारा तो न पाँचों इन्द्रियों का पोषण होता है, कठोपनिषद् का ऋषि परमात्मा को निर्विषय बताता है। इसी प्रकार भगवान् कृष्ण ने गीता में मन को एकाग्र करके चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में करके आसन पर बैठकर आत्मा शुद्ध करने का उपदेश दिया है। अतः यह सिद्ध हुआ कि जब तक मन का सम्बन्ध विषयों के साथ है वह ईश्वर में

कदापि नहीं लग सकता और मूर्ति मन को एकाग्र करने में कभी सहायक नहीं हो सकती।

मूर्तिपूजा की दूसरी हानि यह है कि मूर्तिपूजक समझता है कि मूर्ति अर्थात् देवता अर्थात् ईश्वर केवल मन्दिर में है, मन्दिर से बाहर नहीं, अतः मन्दिर से बाहर याद न करने की उसे छुट मिल जाती है। आपने मूर्तिपूजकों को अक्सर यह कहते सुना होगा कि चलो मन्दिर में चलकर शपथ लो कि यह कार्य तुमने नहीं किया। मैं मूर्ति के सामने यह घोषणा करता हूँ कि जो कुछ मैंने कहा है सत्य कहा है। मन्दिर में मेरा कथन कदापि झूठ नहीं हो सकता। धीरे–धीरे मन्दिर के अहाते में पाप करने में भी उसे डर नहीं लगता और जब उसे कसम उठानी होती है तो मूर्ति पर हाथ रखकर शपथ लेता है। क्योंकि अब वह यह समझने लगा है कि परमात्मा केवल मूर्ति में ही है, अन्यत्र कहीं नहीं है। बात सीधी है मूर्तिपूजक का भगवान् एकदेशीय होता है, इस वास्ते जहाँ भी वह न हो वहाँ पाप करने में उसे झिझक नहीं होती। फिर मूर्ति पूजक की यह धारणा कि चाहे कितना ही बुरा पाप कर लूँ मूर्ति के दर्शन करने, उसका चरणामृत पीने, उस पर जल चढ़ाने, उसका प्रसाद बाँटने, उसके आगे माथा टेकने आदि से पापों के फल से छुटकारा मिल जायेगा अतः ''भैया भये कोतवाल डर काहे का'' वह जी खोलकर पाप करता है और जी खोलकर पापों की निवृत्ति भी करा लेता है। मूर्तिपूजक कहता है :–

अकाल मृत्यु हरण सर्व व्याधि विनाशनम्।
विष्णु पादोदकम्, पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

अर्थात् विष्णु का चरणामृत अकाल मृत्यु से बचाता है, सब बीमारियों को दूर करता है और पुनर्जन्म से छुटकारा दिलाता है।

जिसके पास ऐसी संजीवनी बूटी हो वह पाप करने से भला क्यों डरे।

मूर्तिपूजक का विश्वास होता है कि भगवान् भक्ति से प्रसन्न होते हैं, गुणों से नहीं। उन्होंने ध्रुव की आयु नहीं देखी थी। गज और ग्राह की लड़ाई में गज की रक्षा किसी विद्या के कारण नहीं की थी, दासी पुत्र विदुर की जाति नहीं देखी थी, कंस के पिता उग्रसेन की वीरता नहीं देखी थी, सुदामा का धन नहीं देखा था, परमेश्वर गुण नहीं देखते भक्ति देखते हैं।

अपि चेत्सु दुराचारो भजते मामनन्य भाव।
साधु रेव समन्तव्यः सम्यक व्यवसितो हि सि।।
अपि चेदसि पापेभ्यः सवैभ्य पाप कत्तमः।
सर्व ज्ञान प्लवेनैव वृजिन संतरिष्यासि।।
तेरा कहीं यदि पापियों से घोर पापा चार हो।
इस ज्ञान नैया से सहज में पाप सागर पार हो।।

जो अनन्य भाव से मुझे भजता है जो भक्त है यदि वह दुराचारी भी हो उसको साधु ही जानना चाहिए इस मान्यता का परिणाम है कि लम्पट साधू संन्यासी पण्डे और पुजारी कितने ही पापी और दुराचारी होते हुए भी पूज्य माने जाते हैं और उनको भंग सुल्फा आदि साधन भी दिये जाते हैं। हमारे पड़ोस में देवी का जागरण होता था और गाने वालों का नेता उस्ताद अथवा गुरु आगे बोलने वाला शराब पीकर बोलता था, क्योंकि उसके बिना सारी रात कैसे जागे। इस पर भी लोग जानते हुए उसे देवी का भक्त मानते थे। इससे सिद्ध होता है कि मूर्ति पूजक इस मान्यता के अनुसार घोड़े गधे को एक बराबर समझता है।

चारों वेदों में कहीं भी नहीं कहा गया है कि भगवान् की मूर्ति बना कर पूजनी चाहिए। मूर्ति किस चीज की बननी चाहिए सोने, चाँदी की, संगमरमर की, मिट्टी की, पीतल–ताँबे की, पत्थर की अथवा, सीमेन्ट की। और फिर कितनी बनाई जाएँ चार, आठ अथवा दस या बीस। वेद में तो स्पष्ट आता है :–

''न तस्य प्रतिमा यस्य नाम महद्यशा''

उस परमेश्वर की मूर्ति नहीं है, उसका नाम महान् यश वाला है। इससे सिद्ध होता है कि मूर्ति पूजा सर्वथा वेद विरूद्ध है और लोगों ने अपना उल्लू सीधा करने, भोले–भाले व्यक्तियों को फंसाने के लिए ढोंग चलाया था और लकीर के फकीर लोग अब भी उसी रास्ते पर चले जा रहे हैं। वास्तव में वेद विरूद्ध कर्मों का करना पाप और अधर्म है।

मूर्ति पूजा के कारण जो मन्दिर में अपार धन आता है, वह निरर्थक बन्द पड़ा रहता है। करोड़ों

शेष पृष्ठ 6 पर

बंद हो विधवाओं पर अत्याचार

— मोहिनी गिरी

वह सामाजिक कार्यकर्ता हैं, लेखिका हैं और महिला आंदोलन की नेता भी। मोहिनी गिरी 40 साल से भारत व दक्षिण एशिया में युद्ध प्रभावित परिवारों के लिए संघर्ष करती रही हैं। पेश है अमेरिका की केंटकी यूनिर्सिटी के एक कार्यक्रम में विधवाओं के हालात पर मोहिनी गिरी के भाषण के मुख्य अंश।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने सर्वप्रथम महिलाओं की सुरक्षा एवं उनके उत्थान के लिए अनेकों क्रांतिकारी कदम उठाये थे। महिलाओं को सम्मान दिलाने के लिए महर्षि ने बाल विवाह तथा अनमेल विवाह का निषेध तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया था तथा स्त्री शिक्षा के विस्तार के लिए अनेकों विद्यालय तथा गुरुकुल खुलवाये थे। आज महिलायें पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं और जो सम्मान उनको प्राप्त हो रहा है उसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी तथा आर्य समाज का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने में आर्य समाजियों ने विशेष योगदान प्रदान किया था। आर्य समाज के कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने विधवाओं से विवाह करके समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत किये थे।

भेदभाव और शोषण

मैं आज यहाँ आपसे विधवाओं के मुद्दे पर बात करना चाहती हूँ। आप पूछेंगे कि भला इस मंच पर विधवाओं का मुद्दा क्यों?दरअसल, हम सब एक वैश्विक समुदाय का हिस्सा हैं। हमें एक–दूसरे की समस्याओं के बारे में पता होना चाहिए, ताकि समाधान की दिशा में कदम उठाए जा सकें। दुनिया भर में बड़ी संख्या में महिलाएँ युद्ध व हिंसा की वजह से अपने पति को खो देती हैं। काश! ये लड़ाइयाँ खत्म हो जायें। ऐसा हुआ, तो यकीनन यह दुनिया एक बेहतर जगह बन पायेगी। बेवा औरतों के साथ हमेशा से भेदभावपूर्ण व्यवहार होता रहा है। वर्ष 2010 के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में लगभग 4.5 करोड़ विधवाएँ हैं। इनमें से चार करोड़ को विधवा पेंशन नहीं मिलती। संकीर्ण परम्पराओं के नाम पर इन्हें इनके अधिकार से वंचित रखा जाता है और परिवार के अंदर उन्हें बोझ समझा जाता है।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था

भारत में विधवाओं की खराब हालत के लिए काफी हद तक पितृसत्तात्मक व्यवस्था जिम्मेदार है। इस व्यवस्था के तहत परिवार के अंदर सारे अधिकार पति के पास होते हैं। ऐसे में, पति की मौत होते ही महिला से सारे अधिकार छिन जाते हैं और उसका शोषण शुरू हो जाता है। कहने के लिए तो देश में महिलाओं के लिए कई कानून हैं। लेकिन असल में इन कानूनों का पालन नहीं हो पाता। अक्सर पति की मौत के बाद घर की जमीन भाइयों और बेटों में बंट जाती है और विधवा महिला पूरी तरह असहाय हो जाती है। मुझे भी ऐसी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। मेरे पति ने अपनी मौत से पहले अपनी पूरी सम्पत्ति मेरे नाम कर दी थी, लेकिन मुझे यह अधिकार हासिल करने के लिए कानूनी अड़चनों का सामना करना पड़ा। मुझसे कहा गया कि मैं अपने बेटों से इस बारे में एनओसी लेकर आऊँ।

दूसरी शादी नहीं

हमारे यहाँ विधवाओं की दूसरी शादी का चलन ही नहीं है। पति की मौत के बाद पत्नी को बाकी की जिंदगी अकेले ही बितानी पड़ती है। हिन्दू विवाह परम्परा में माना जाता है कि शादी सात जन्मों का रिश्ता है। ऐसे में विधवा स्त्री दूसरे विवाह के बारे में सोच भी नहीं सकती। पति की मौत के बाद उसे पूरे जीवन कठिनाइयों से जूझना पड़ता है। परम्परा के नाम पर इन्हें सफेद धोती पहननी पड़ती है। विधवाओं के लिए सज–संवरकर रहना गलत माना जाता है।

औरतों को अपशकुनी या चुड़ैल मान लिया जाता है। उत्तर मध्य भारत और नेपाल के कुछ ग्रामीण इलाकों में ऐसी घटनाएँ देखने–सुनने में आई हैं। ऐसे मामलों में स्थानीय पंचायतें भी कुछ नहीं कर पाती हैं। भारत में आज भी कुछ ऐसे इलाके हैं, जहाँ बाल विवाह और बेमेल विवाह की कुप्रथा बदस्तूर जारी है। मसलन राजस्थान के कुछ इलाकों में बहुत छोटी उम्र में लड़कियों की शादी कर दी जाती है। कई बार तो कम उम्र की लड़कियों का विवाह उनसे कई गुना ज्यादा वय के पुरुषों से कर दिया जाता है। ऐसे में, जब ये लड़कियाँ जवान होती हैं, तब तक उनके पति बूढ़े हो जाते हैं। पति की मौत के बाद इन्हें बाकी जिन्दगी विधवा बनकर गुजारनी पड़ती है।

बात बरसों पुरानी है। मैंने वृंदावन में सड़क पर एक विधवा का शव देखा। स्थानीय लोगों ने उसका अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। उनका कहना था कि विधवा का शव छूने से अपशकुन होता है। ऐसे अंधविश्वासों की वजह से ही समाज में विधवाओं का शोषण होता है।

वृंदावन का हाल

अब मैं आपसे वृंदावन की बात करूँगी। वृंदावन में हजारों विधवाएँ हैं, जिन्हें उनके बेटे या परिवार वाले कृष्ण दर्शन के नाम पर छोड़ गए और लौटकर कभी उनका हाल पूछने नहीं आए। आज से 25–30 साल पहले की बात है। तब मैं महिला आयोग की अध्यक्ष थी। मैं वृंदावन की विधवाओं का हाल जानने वहाँ पहुँची। मैंने सड़क पर एक शव देखा। उस शव को चील–कौवे नोच रहे थे। यह देखकर मेरा दिल दहल गया। मैंने स्थानीय लोगों से कहा कि वे सब मिलकर उसका अंतिम संस्कार करें। उन्होंने कहा कि वे विधवा का शव नहीं छू सकते, यह अपशकुन होता है। ऐसी ही तमाम भ्रांतियां और परम्पराएँ हैं, जिनके नाम पर विधवाओं का शोषण होता रहा है।

दर्दनाक कुप्रथा

दक्षिण एशिया में कुछ ऐसे इलाके भी हैं, जहाँ विधवा

अशिक्षा व गरीबी

विधवाओं की खराब स्थिति के लिए अशिक्षा एक बड़ी वजह है। जहाँ अशिक्षा है, वहाँ गरीबी का होना तय है। गरीबी की वजह से विधवाओं को बुनियादी जरूरतें, जैसे भोजन, कपड़े और दवाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं। अनपढ़ होने का ज्ञान नहीं होता और वे चुपचाप शोषण बर्दाश्त करने को मजबूर हो जाती हैं। उनके लिए राज्य और केन्द्र सरकार की कई योजनाएँ हैं, लेकिन इनका लाभ उन तक नहीं पहुँचता।

बुजुर्गों के अधिकार

देश में बुजुर्गों की सामाजिक सुरक्षा का कोई खास प्रबन्ध नहीं है। हमारा समाज पहले से ही महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण रवैया अपनाता है, इसलिए बुढ़ापे में एक विधवा के लिए जीवन और कठिन हो जाता है। विधवाओं के लिए एक लघु बचत योजना होनी चाहिए, ताकि वे अपने बुढ़ापे के लिए कुछ पैसा जमा कर सकें। हमें विधवाओं से सम्बन्धित व्यवस्थित आंकड़े एकत्र करने होंगे, ताकि उनके लिए व्यापक योजनाएँ बनाई जा सकें। विधवाओं के इलाज और स्वास्थ्य की देखरेख की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की होनी चाहिए। आखिर उन्हें भी सम्मान से जीने और मुस्कराने का हक है।

— प्रस्तुति — मीना त्रिवेदी

— हिन्दुस्तान, देहरादून से साभार

भारतीय संस्कृति में व्यष्टि और समष्टि की पहचान

– स्व. विद्यानिवास मिश्र

स्वर्गीय पं. विद्यानिवास मिश्र जी एक सजग, बौद्धिक, निर्भीक कलम के धनी व्यक्ति हैं, उन्होंने अपने लेखन में भारतीय जीवन दृष्टि को बड़े साहस के साथ उभारने का प्रयास किया है। मिश्र जी के लेखन में एक विशेष प्रकार की व्यापकता और वस्तुनिष्ठता है जो पाठक को सोचने के लिए उद्वेलित करती है। प्रस्तुत लेख ''भारतीय नारी की अस्मिता'' में उन्होंने नारी के विशेष गुणों का वर्णन करते हुए भारतीय नारी को विशिष्ट बताया है। –सम्पादक

भारतीय संस्कृति का प्रमुख अभिलक्षण ही यह है कि यहाँ समष्टि व्यष्टियों का योग नहीं है, न व्यष्टि कोई स्वतंत्र निरपेक्ष इकाई। अधिक स्पष्ट करना चाहें तो यों कह सकते हैं कि हम समष्टि को एक चेतन शरीर के विराट शरीर के रूप में देखते हैं, जिसमें हर एक अंग की अपनी अलग भूमिका है, पर वह भूमिका इस पूरे विराट शरीर को ध्यान में रखते हुए हैं। कोई भी अंग यदि कट जाये तो किसी न किसी रूप में अधूरापन आ जाता है। हमारे मन को खंडित विग्रह स्वीकार नहीं है। कोई घर कहीं खंडहर होता है तो जितना बचा रहता है, उसी को नए सिरे से पूरा करने की कोशिश की जाती है। जो वस्तु खंडित हो जाती है, उसको हम नदी में विसर्जित कर देते हैं। यदि वह किसी तरह आग में गलाने से या और किसी उपाय से जुड़ सके तो जोड़ते हैं, पर फूटी थाली में भोजन करना हम शुभ नहीं मानते। यह बात हिन्दुस्तान में सदियों तक साथ जीने से किसी रासायनिक प्रक्रिया से ऐसे बस गई है कि जिसे हम आज के पश्चिम के समाज में इंडिविजुअल

जिनका चेतन तत्त्व संकुचित होता है, जिनका क्षितिज कुछ घिरा–सा होता है, तरह–तरह के अवरोधों से, तरह–तरह की दीवारों से उन्हीं के दिमाग में यह लेखा–जोखा लिया जाता है – यह मेरा अपना है, यह दूसरे का है। पर जिनके मन का बड़प्पन उनके आचरण में साकार होगया है, वे पूरी वसुधा को एक छोटा सा कुटुंब मानते हैं – कुटुंब भी बड़ा नहीं, जहाँ अलग–अलग खंड हों, अलग–अलग देहलियाँ हों, अलग–अलग आँगन हों, बस एक देहली हो, एक आँगन हो – ऐसा कुटुंब, जिसमें कुछ भी अलग नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि हर एक के भीतर जो क्षमता है, उसके विकास की कोई गुंजाइश न हो। कुटुंब हर एक सदस्य के विकास की जिम्मेवारी कुटुंबमात्र की है। मुझे शिक्षा यही मिली और मैं समझता हूँ, हिन्दुस्तान के गाँव में रहने वाले करोड़ों बच्चों को यह शिक्षा मिली होगी कि जो भी तुम्हें मिला है, उसमें सबका हिस्सा है। और याद रखो, इस सब में बहुत लोग शामिल हैं, केवल तुम्हारे सगोतिया या कुटुंबी नहीं, केवल तुम्हारे गाँव–पुरवे के आदमी नहीं, पूरी सृष्टि, पृथ्वी लोक के बाहर की भी सृष्टि शामिल है। चंदा तुम्हारा मामा है और आकाश तुम्हारा पिता है, पृथ्वी तुम्हारी माता है, कोटि–कोटि प्रकाशवर्षों दूर टिमटिमाते हुए ये तारे तुम्हारे सगे रिश्तेदार हैं, उनकी गति तुम्हारी गति से जुड़ी हुई है।

या व्यक्ति कहते हैं, न वह अस्तित्व रखता है, न वह निराकार समाज महत्त्व रखता है, जिसे हम व्यक्तियों का समूह मानते हैं।

उदाहरण देकर समझाऊँ, निजी एकांत या प्राइवेसी की अवधारणा हमारी समझ में नहीं आ पाती। होश संभालते ही चार–पाँच वर्ष के बच्चे की चपलाई अलग हो जाये, उसकी हर चीज पर उसकी अपनी पहचान होना, उसके एकांत में दखल देना गंभीर अपराध हो जाये, हमारे लिए कुछ बड़ी बनाई हुई बात लगती है, असहज लगती है। मैं विदेश में अपने एक मित्र के परिवार के साथ पंद्रह दिनों तक रहा और देखा कि पाँच वर्ष की बच्ची का कमरा अलग हो गया है। एक तरह से यह सोच लिया गया है कि व्यक्ति की स्वाधीनता की शिक्षा बचपन से शुरू कर देनी चाहिए। मुझे यह देखकर अजीब सा लगा। मैं छोटा था तो अपने से तीनेक बरस बड़ी दीदी के साथ खेलता, उसकी कॉपी लेकर बैठ जाता, उस पर अपना अधिकार मानता, मैं क्या पराधीनता या परावलंबन की शिक्षा पा रहा था?मैं अब देश–विदेश बहुत समय घूमने के बाद इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि सारी गड़बड़ी की जड़ निज और पर की अलग–अलग पहचान है।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

जिनका चेतन तत्त्व संकुचित होता है, जिनका क्षितिज कुछ घिरा–सा होता है, तरह–तरह के अवरोधों से, तरह–तरह की दीवारों से उन्हीं के दिमाग में यह लेखा–जोखा लिया जाता है – यह मेरा अपना है, यह दूसरे का है। पर जिनके मन का बड़प्पन उनके आचरण में साकार होगया है, वे पूरी वसुधा को एक छोटा सा कुटुंब मानते हैं – कुटुंब भी बड़ा नहीं, जहाँ अलग–अलग खंड हों, अलग–अलग देहलियाँ हों, अलग–अलग आँगन हों, बस एक देहली हो, एक आँगन हो – ऐसा कुटुंब, जिसमें कुछ भी अलग नहीं। इसका अर्थ यह नहीं कि हर एक के भीतर जो क्षमता है, उसके विकास की कोई गुंजाइश न हो। कुटुंब हर एक सदस्य के विकास की जिम्मेवारी कुटुंबमात्र की है। मुझे शिक्षा यही मिली और मैं समझता हूँ, हिन्दुस्तान के गाँव में रहने वाले करोड़ों बच्चों को यह शिक्षा मिली होगी कि जो भी तुम्हें मिला है, उसमें सबका हिस्सा है। और याद रखो, इस सब में बहुत लोग शामिल हैं, केवल तुम्हारे सगोतिया या कुटुंबी नहीं, केवल तुम्हारे गाँव–पुरवे के आदमी नहीं, पूरी सृष्टि, पृथ्वी लोक के बाहर की भी सृष्टि शामिल है। चंदा तुम्हारा मामा है और आकाश तुम्हारा पिता है, पृथ्वी तुम्हारी माता है, कोटि–कोटि प्रकाशवर्षों दूर टिमटिमाते हुए ये तारे तुम्हारे सगे रिश्तेदार हैं, उनकी गति तुम्हारी गति से जुड़ी हुई है। तुम्हारे भीतर का ही वसंत बाहर आकर कली, फूल, मीठी गंध, भीनी गंध से बौराई बयार, उस बयार के कारण विचित्र सा अनमनापन, एक अजीब बेचैनी कि कहीं कोई है जो पुकार रहा है, यह सब बन जाता है। कोयल की विह्वल पुकार अपने भीतर की पुकार बन जाती है। एक तरह से व्यष्टि के ऐसे विस्तरण की आकांक्षा ही समष्टि है, और ऐसी आकांक्षा से मन की परतें खुलती हैं, पेड़ों की जैसे गाँठें नए इल्ले के रूप में, नई कोंपल के रूप में फूटती हैं वैसे ही अपने भीतर की निजता की गाँठें फूटती हैं – सही माने में आत्मविस्तरण होता है, एक खुलापन आता है कि मेरा रोम–रोम सबके लिए है। मेरी अकेली कोई सिहरन माने नहीं रखती, सबकी सिहरन बनती है तो मैं महाप्राण हो उठता हूँ। हमें बचपन से ही घर में घुसे रहने की शिक्षा नहीं मिली, घर तो बराबर बाहर करता है – आम के बगीचे में जाओ, वहाँ आमों में बौर आए हैं। वहाँ अब कैरियाँ आ गई हैं, कैसी सलोनी कि बस मुँह में पानी भर जाये, वहाँ आम पक गए हैं, अब टपक रहे हैं, उठो–उठो, इतनी देर हो गई, महुए के कूचे जमीन पर बिछ गए होंगे मोती के दानों की तरह, चलो, उन्हें बीना जाये। अलग–अलग अपनी ढेरी लगाते भी हैं तो यह दिखाने के लिए कि हमने अपना इतना योगदान दिया, इसलिए नहीं है कि वह ढेरी अपनी, बस अपनी हो।

ऐसी साझेदारी की शिक्षा में अगर लोगों की दृष्टि में कोई कमी है तो यह है कि ज्यादा से ज्यादा चाही–अनचाही वस्तुओं की खरीद का माहौल पैदा करने वाले उपभोक्ता संसार का प्रतिस्पर्धा भाव जरूर दब जाता है और लोग समझते हैं, इससे विकास रुक जाता है। विकास के लिए प्रतिस्पर्धा या होड़ जरूरी है, पर प्रतिस्पर्धा तो यहाँ भी रहती ही रहती है, बच्चे माँ के आगे जनने वाली माँ के आगे नहीं, घर की उस घरैतिन के आगे, जो सब बच्चों की माँ है – होड़ लगाते हैं – माँ, पहले मुझे दो, मैं आम की गुठलीवाला हिस्सा नहीं लूँगा, मैं पहले आया, और माँ सबको हिस्सा ऐसे देती है कि सब संतुष्ट हो जाते हैं, एकाध ऐसे बच्चे होते हैं जो बड़े अधिकार चेतन होते हैं, माँ बस उससे कहती है, लो तुम्हीं सबको बाँट दो और वह बच्चा संतुष्ट हो जाता है। पर जब वह बाँटने चलता है तो अपने लिए सबसे कम हिस्सा लगाता है। इसलिए प्रतिस्पर्धा तो यहाँ है, ऋषियों के आश्रमों में कुटियों को छेंक लेते हैं मृगों के छौने – यह जो जंगली धान्य के दाने सुखाकर भतीर रखते जा रही हो, इसमें हमारा हिस्सा है, दे दो, तब जाने पाओगी, वे होड़ लगाते हैं, आदमी के बच्चों से नन्हे–नन्हे बिरसे तक होड़ लगाते हैं – हमें पानी दे दो, तब जंगल से लकड़ी बीनकर लाए बच्चों को पानी दो। पर यह होड़ दूसरे का अधिकार नहीं छीनती।

कई बार लोगों ने विदेश में मुझसे पूछा कि हिन्दुस्तान जब इतना शक्तिशाली था, उसने उपनिवेश क्यों नहीं बनाए?हिन्दुस्तान के पुराने राजा चक्रवर्ती बनने के लिए दिग्विजय करते थे तो फिर राजाओं को उनके राज्य क्यों सौंप देते थे?मैंने यही उत्तर दिया कि विजय का अर्थ दूसरे का विनाश या विलोप नहीं है, विजय का अर्थ केवल अखंडता की पहचान कराना है। यह बात हमारे अवचेतन में आज भी है, बावजूद उपभोक्ता अपसंस्कृति के भयावह प्रसार के। हमारे यहाँ व्यष्टि का महत्त्व इसलिए है कि उसके भीतर समष्टि है। प्रत्येक व्यष्टि अपनी समष्टि रचता है, किसी की समष्टि है कला, किसी का संगीत, किसी का नाट्य, किसी का साहित्य, किसी का कोई हस्तशिल्प, किसी की खेती, किसी की बनजारी – हरेक जो करता है वह ऐसे साधकर करता है कि जो उससे बन पड़े, वह सबके लिए नैवेद्य होने योग्य हो। हम पूजा करते हैं, गंध–अक्षत–फूल–धूप–दीप सबके बाद नैवेद्य अर्पण करते हैं, नैवेद्य के रूप में अपने भीतर की पूरी मिठास अर्पित करते हैं। अपने भीतर की मिठास की पहचान ही व्यष्टि की सार्थकता है। हमारे यहाँ समष्टि का महत्त्व इसलिए है कि वह व्यष्टि रूप में अवतरित होने के लिए लाचार है, छछिया भर छाछ पर नाचने के लिए तैयार है। हमें नहीं चाहिए ऐसी समष्टि, जो हमारे साथ खेल–खेल में हार जाये तो हमें अपने कंधे पर चढ़ाने में नाहीं–नूहीं करे। हमें अपने लय में विलयित होने वाला सागर नहीं चाहिए, हमें चाहिए अपने ही ज्वार से उछली हुई बूँदों की खोज में बेचैन और भटका हुआ सागर। हम विराट का आवाहन करते हैं – लघु होकर देखो, बच्चे बनकर देखो, क्या मजा है लघु होने में, लघु होकर फिर अपने स्वरूप को स्मरण करने में, इसीलिए हमें सृष्टि के अंत में भी बरगद के पत्ते पर सोए उस बच्चे का बिंब बड़ा मोहक लगता है जो दाएँ हाथ से दाएँ पैर का अँगूठा अपने मुँह में डाल रहा है, परख रहा है कि लोग कहते हैं, इस अँगूठे से गंगा की धारा फूटी है, कैसी है वह जीवन की धारा, कैसा है उसका रस। यही है हमारी पहचान।

– भारतीय संस्कृति के आधार से साभार

पृष्ठ–4 का शेष

मूर्ति पूजा से हानियाँ

रुपये व्यय करके मन्दिर बनवाये जाते हैं। लाखो रुपये तुलसी सालग राम की शादी में खर्च कर दिये जाते हैं जबकि देश के अनगिनत लोगों को रात में भूखा सोना पड़ता है। उनके पास तन ढापने के लिए कपड़ा नहीं है, लाखों विधवाएँ असहाय होती हैं। लाखों अनाथ बालक भटकते फिरते हैं, देश में निर्धनता का नंगा नाच देखने में आता है। यदि यह करोड़ों ही नहीं अरबों रुपयों की धन राशि देश के हित में लगाई जाए तो देश का बेड़ा पार हो जाए और सभी निवासियों का भी कल्याण हो सकता है।

मूर्ति पूजा से देश में बेकारी बढ़ती है, हरिद्वार में चले जाइये, हजारों पण्डे हराम की कमाई पर पल रहे हैं। भिखमंगों की संख्या बढ़ रही है। सरकार चाहते हुए भी तीर्थ स्थानों को भिखमंगों से खाली नहीं करा सकती। हजारों बालक, बूढ़े स्त्री–पुरुष केवल दूसरों की कमाई पर पलना अपना अधिकार समझते हैं। अकेले जगन्नाथपुरी में ऐसे स्त्री–पुरुषों, बालकों, जवानों और बूढ़ों की संख्या दस हजार से कम नहीं जिनका काम दूसरों को ठगकर पेट पालने के सिवाय और कुछ नहीं है। देश में अनाज की कमी है किन्तु वहाँ दो हजार हाँडी चावल की प्रति दिन बिकती है और इस प्रकार बीस पच्चीस मन चावल पकाकर लोगों को खिलाकर देश में बेकार लोगों की संख्या बढ़ाई जाती है। इनमें सात सौ परिवार वह हैं जिनका कार्य केवल मूर्तियों का श्रृंगार करना है, उनके कपड़े बदलना है। दो हजार क्वांरी लड़कियाँ हैं जो मन्दिर में नाचती हैं और देव दासियाँ कहलाती हैं। ऐसी ही हालत अन्य बहुत से मन्दिरों में है। क्या मूर्ति पूजा से उपरोक्त हानि कुछ कम हानि है।

मूर्ति पूजा लोगों के अन्दर आलस्य, प्रमाद, निकम्मापन, भीरुता उत्पन्न करती है। अपने ऊपर भरोसा नहीं करने देती। मूर्तिपूजक समझने लगते हैं कि मूर्ति देश–विदेश के शत्रुओं से हमारी रक्षा करेगी यदि इनका बस चले तो फौजों को अवकाश दे दिया जाए और विदेशियों से जो संघर्ष चल रहा है, उसे इन मूर्तियों के हवाले कर दिया जाए और सभी लोगों को आदेश दे दिये जाएँ कि वह पैर फैलाकर बेफिकरी नींद सो जाएँ। मूर्ति अपनी तथा हमारी रक्षा स्वयं कर लेगी। ऐसा ही सोमनाथ के मन्दिर के ऊपर महमूद गजनवी के आक्रमण के समय हुआ था। कैसा उपहास बना रखा है भगवान् का इन मूर्ति पूजकों ने। दुःख की बात है कि देश से बुद्धिमत्ता वीरता का बहिष्कार इस मूर्ति पूजा ने कर दिया और घर–घर में मूढ़ता नपुँसकता का डेरा जमा दिया।

इस प्रकार से मन्दिरों में जो करोड़ों रुपयों की चढ़ावे की धन सम्पत्ति जमा हो जाती है तथा सोने, चाँदी के आभूषण, बरतन रेशमी कपड़े, शाल–दुशाले इकट्ठे हो जाते हैं। आक्रमणकारियों को आक्रमण का बुलावा देते हैं। चोरों डाकुओं के लालच का कारण बनते हैं, भूतकाल में ऐसी बहुत सी घटनाएँ घटी हैं जो उपरोक्त तथ्यों की पुष्टि करती हैं। और भी अनेकों बुराइयाँ हैं मूर्ति पूजा की। किन्तु यहाँ इतना ही लिखना काफी है। देशवासी सोचें यदि आज की दुनिया में देश को ऊँचा उठाना है तो मूर्ति पूजा को छोड़ना होगा। केवल तपस्या के जीवन से ही देश की समृद्धि हो सकती है और देश शक्तिशाली बन सकता है।

– वैदिक विचार से साभार

आर्य कन्या स्कूल में मेधावी छात्राओं का अभिनन्दन

अलवर, 17 जुलाई। आर्य कन्या विद्यालय दयानन्द मार्ग में सोमवार को मेधावी छात्राओं का अभिनन्दन किया गया। विद्यालयी छात्र भूमिका ने वैदिक परम्परानुसार अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया।

निदेशक कमला शर्मा ने बताया कि समारोह का प्रारम्भ ईश वंदना से हुआ। राजस्थान बोर्ड की कला सीनियर सेकेंडरी कक्षा की राज्य वरीयता सूची में नवां स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा अदिति वशिष्ठ को सम्मानित किया गया।

इसके अलावा मेधावी छात्रा प्रीति शेखावत, कु. भारती सैनी, डोली सैनी को सम्मानित करते हुए आर्य कन्या विद्यालय समिति के प्रधान जगदीश प्रसाद गुप्ता ने टेबलेट तथा अन्य छात्राओं को 2100–2100 रुपये नकद राशि से पुरस्कृत किया गया। आर्य द्वारा अदिति वशिष्ठ को राज्य स्तरीय वरीयता सूची में नवां स्थान प्राप्त करने पर एक हजार रुपये नकद राशि से पुरस्कृत किया गया।

समिति प्रधान ने बच्चों में आगे के जीवन में दृढ़ इच्छा शक्ति से अध्ययन कर अपना उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए प्रेरित किया। समिति निदेशक कमला शर्मा ने बच्चों को नैतिक व मानवीय मूल्यों का इस्तेमाल कर बच्चों को ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर अशोक आर्य, प्रदीप आर्य, सुरेश दरगन, प्रद्युम्न गर्ग, डॉ. राजेन्द्र आर्य, अमर मुनि, छबीलदास पावा, वेद प्रकाश शर्मा, कृष्ण लाल, अदलखां, सुनील कुमार, प्रमोद आर्य, इंद्रा आर्य, सुमन आर्य, दिविशा आर्य, शशि भार्गव आदि मौजूद थे।

उत्तराखण्ड में जल प्रलय के कारण अनाथ बच्चों को आर्य समाज और गुरुकुल गोद लेंगे

आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर और गुरुकुल चित्तौड़गढ़

50–50 बालक–बालिकाओं की निःशुल्क आवास, भोजन और शिक्षा की व्यवस्था करेगा

जयपुर 10 जुलाई! आज दिनांक 10 जुलाई, 2013 को आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर की साधारण सभा की बैठक में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने अनेक महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ की। सामवेदी जी ने कहा कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। उत्तराखण्ड में स्वामी श्रद्धानन्द के समय में अकाल पड़ा तब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जो अकाल पीड़ितों की सहायता की वह आर्य समाज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। देश में जब–जब भी दुर्भिक्ष, अकाल, भूकम्प, बाढ़ आदि के कारण जनता त्रस्त हुई तब आर्य समाज के नेताओं ने और विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द एवं लाला लाजपतराय ने जो जन सेवा की उसकी सारी देश में भूरि–भूरि प्रशंसा हुई। राजस्थान एवं उत्तराखण्ड में अकाल पड़ने पर लाला लाजपतराय अनाथ बच्चों को लाहौर ले गये और सारा लाहौर अनाथ बच्चों को अपनी गोद में लेने के लिए स्टेशन पर खड़ा था। आर्य समाज का उद्धार भाषणों से नहीं आचरण से होगा। सामवेदी जी ने घोषणा की कि मैं विश्व की समस्त आर्य समाजों से अपील करता हूँ कि उत्तराखण्ड में जल प्लावन के कारण जो बच्चे अनाथ हो गये हैं उन्हें वे गोद लें और जो लोग बेसहारा हो गये हैं उन्हें आश्रय दें। सामवेदी जी ने जब यह घोषणा की कि आर्य समाज आदर्श नगर जयपुर 50 अनाथ बच्चों को गोद लेगा तो सारा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। सामवेदी जी ने बताया कि आज गुरुकुल चित्तौड़गढ़ से फोन आया कि वे भी 50 अनाथ बालकों की मुफ्त आवास, भोजन एवं शिक्षा की व्यवस्था करने के लिए तैयार हैं। यदि सैकड़ों आर्य समाज इस अभियान में शामिल हो जायें तो उत्तराखण्ड की विभीषिका के कारण जितने भी बच्चे अनाथ हो गये हैं उनको भारतवर्ष की कुछ समाजें और गुरुकुल ही गोद ले सकते हैं और बेसहारा लोगों को आश्रय दे सकते हैं। हम उत्तराखण्ड के मंत्री श्री यशपाल आर्य एवं अन्य प्रान्तों के मुख्यमंत्रियों को पत्र भेज कर अनाथ बच्चों को आर्य समाजों में भेजने के लिए आग्रह करेंगे और इस पावन कार्य में हमें गैर आर्य समाजी लोगों का भी पूरा सहयोग मिलेगा।

सभा में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के व्याख्याताओं, अध्यापकों, अध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए सामवेदी जी ने कहा कि हमारी शिक्षण संस्थाओं का उद्देश्य विश्ववारा या प्रथमा संस्कृति का प्रचार करना है ताकि हम कृण्वन्तों विश्वमार्यम् के स्वप्न को साकार कर सकें और विश्व में आध्यात्मिक आधिभौतिक एवं आधिदैविक शांति स्थापित कर सकें।

सामवेदी जी ने कहा कि शिक्षक दुनिया में क्रांति ला सकते हैं। हमारी संस्थाओं में आज से ही प्रथम कक्षा से बारहवीं कक्षा तक देश भक्ति एवं क्रांति गीतों को प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम शुरू कर देना चाहिए और पांचवीं कक्षा तक संस्कृत और अंग्रेजी के सम्भाषण प्रशिक्षण को अनिवार्य किया जाता है। इस प्रकार हमारे छात्र–छात्राएँ आर्य समाज की श्रेष्ठ प्रचारक बन सकेंगे और विश्व में वेदों का डंका बजायेंगे। इस वर्ष हम आर्य समाज आदर्श नगर को विश्व में वेद प्रचार और आर्य समाज प्रचार का केन्द्र बनायेंगे।

संस्कृति की रक्षा करना हमारा मुख्य दायित्व

511 कुण्डीय जन–चेतना महायज्ञ सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम द्वारा 511 कुण्डीय जन–चेतना महायज्ञ का आयोजन मेरठ महानगर के हृदयस्थल पर स्थिति महाराणा प्रताप प्रांगण (जीमखाना मैदान) में भव्य रूप से किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (कुलपति गुरुकुल प्रभात आश्रम) थे। विशाल पंडाल में 511 कुण्ड श्रृंखलाबद्ध रूप से सुसज्जित थे, जिन पर लगभग 4044 यज्ञमान व आहुति देने हेतु अन्य लोग यज्ञवेदी पर बैठे थे।

मुख्य यज्ञमान के रूप में सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, पूर्व महापौर सुशील गुर्जर, कुसुम शास्त्री, विवेक शेखर, यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विवेकानन्द का माल्यार्पण कर वरण किया। कार्यक्रम प्रभारी अशोक सुधाकर एवं ओम प्रकाश जौहरी ने स्वागत किया।

इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द सरस्वती ने कहा कि अपनी संस्कृति की रक्षा करना हमारा मुख्य दायित्व है। इसीलिए हमें वैदिक नववर्ष, जिसको हम लोग पाश्चात्य सभ्यता के कारण विस्मृत कर चुके हैं, पूर्ण उत्साह एवं उमंग से मनाना चाहिए। अपनी सांस्कृतिक धरोहर एवं परम्पराओं को स्मरण कराने एवं इन्हें सुरक्षित रखने के लिए ही गुरुकुल प्रभात आश्रम पिछले 16 वर्षों से जन–चेतना महायज्ञ का आयोजन कर रहा है।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक राजेश सेठी ने कहा कि भारत की संस्कृति ही यज्ञ की संस्कृति है।

सभी आर्य समाजों एवं ग्रामीण अंचलों से बड़ी संख्या में पधारे श्रद्धालुजनों ने यज्ञ में भाग लिया। आचार्य डॉ. वाचस्पति, योगेश मुवार, सुशील बंसल, चन्द्रकान्त, अजय गुप्ता, अरुण जिन्दल, संदीप पहल, विक्रम गर्ग का विशेष सहयोग रहा।

– राजेश सेठी, टीकरी, मेरठ

बढ़ती आपराधिक घटनाओं के लिए नशाबन्दी जरूरी

आर्य समाज ने दिया प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन

- कक्षा 1 से 12 तक के पाठ्यक्रम में लागू हो नैतिक शिक्षा।
- नशा है इन घटनाओं का जिम्मेदार।
- कलेक्टर ने ज्ञापन प्रधानमंत्री को भेजने का दिया आश्वासन।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा की ओर से देश में बढ़ती अपराध की घटनाओं के विरोध में प्रधानमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। जिसमें उन्होंने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति तथा टीवी चैनलों के नकारात्मक प्रभाव को इसके लिए जिम्मेदार बताते हुए नैतिक शिक्षा पर बल देने की माँग की।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की अगुवाई में प्रतिनिधि मण्डल में जिला मंत्री कैलाश बाहेती, हरिदत्त शर्मा, रामेदव शर्मा, डॉ. के. एल. दिवाकर, जे. एस. दुबे, रघुराज सिंह, चन्द्रमोहन कुशवाहा, राजीव आर्य थे। उन्होंने कलेक्टर से कहा कि देश में बलात्कार की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। बलात्कार रूपी दानव ने अब मासूम बच्चियों को निगलना भी प्रारम्भ कर दिया है।

उन्होंने ज्ञापन में विशेष सुझाव देते हुए कहा कि कक्षा 1 से 12 तक अनिवार्य रूप से नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू किया जाए। वहीं इस विषय में 60 प्रतिशत अंक लाना अनिवार्य हो। उन्होंने नशे को ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार मानते हुए कहा कि अभी तक घटनाओं में इस बात की पुष्टि हुई है कि शराब के सेवन के बाद ज्यादती की घटना को अंजाम दिया गया। शराब के सेवन के बाद व्यक्ति में गलत राक्षसी प्रवृत्ति के हावी होने के कारण ऐसी खौफनाक घटनाएँ बढ़ रही हैं। उन्होंने शराब सहित विभिन्न नशीले पदार्थों के सेवन और बिक्री पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग की।

उन्होंने कहा कि टीवी, समाचार पत्रों और विज्ञापनों में नारी देह का प्रदर्शन समाप्त होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महिला उद्धार के लिए कई कार्य किये थे। कलेक्टर जोगाराम ने प्रतिनिधिमण्डल को आश्वासन दिया कि आर्य समाज के द्वारा दिये गये ज्ञापन को प्रधानमंत्री के पास भिजवा दिया जायेगा। इससे पहले जिला कलेक्टर का प्रतिनिधियों ने वैदिक मंत्रों के साथ स्वागत किया।

ब्रह्मचारिणियों को मिला स्वर्ण पदक

बीएचईएल के सभागृह में 21 मार्च को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह मनाया गया। इस अवसर पर द्रोणस्थली देहरादून गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी सुनीता को सांख्य योग में प्रथम स्थान तथा भावना को प्राचीन व्याकरण में प्रथम स्थान पाने पर उत्तराखण्ड के राज्यपाल द्वारा स्वर्णपदक प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ. महावीर कुलपति उत्तरांचल संस्कृत विश्वविद्यालय, धर्मेन्द्र शास्त्री लाल बहादुर संस्कृत अकादमी, डॉ. अन्नपूर्णा उपस्थित थे।

इस अवसर पर महामहिम राज्यपाल महोदय ने कहा कि संस्कृत हमारी संस्कृति का प्रतीक है। इसका प्रचार–प्रसार होना चाहिए। कार्यक्रम के मंगलाचरण में अग्निसूक्त का पाठ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया।

– सुमन कुमार 'वैदिक' हरिद्वार

जीन्द में युवक शिविर का भव्य समापन : दयानन्द की सेना तैयार हो रही है

हरियाणा के प्रसिद्ध शहर जीन्द में दिनांक 5 मई से 12 मई 2013 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में ''युवक चरित्र निर्माण शिविर'' का भव्य आयोजन किया गया। शिविर में 150 युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विजेता युवकों के साथ श्री सूर्यदेव व्यायामाचार्य, श्री योगेन्द्र शास्त्री (संयोजक), श्री महेन्द्र भाई,श्री रामकुमार सिंह, आचार्य सुखदेव तपस्वी, श्री मनोहरलाल चावला,श्री ईश्वरसिंह आर्य आदि।

उत्तराखण्ड आपदा पीड़ितों की सहायतार्थ राशि प्रेषित

आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर के साप्ताहिक सत्संग में हाल की उत्तराखण्ड त्रासदी में दिवंगतों के प्रति संवेदना एवं पीड़ितों के प्रति सहानुभूति प्रस्ताव पारित हुआ। त्रासदी पीड़ितों की सहायतार्थ, सदस्यों द्वारा एकत्रित राशि 32000/– रुपये पतंजलि आपदा राहत कोष हरिद्वार के माध्यम से प्रेषित कर दी गई।

''बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय'' की कामना और उद्देश्य के साथ मानसरोवर मध्यम मार्ग मुख्य बाजार में महिला आर्य समाज मानसरोवर के सौजन्य से जल मंदिर (प्याऊ) का लोकार्पण भी किया गया।

– पं. ईश्वरदयाल माथुर, उपप्रधान

NDPSo on 26/27 जुलाई, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 25 से 31 जुलाई, 2013
प्रकाशन की तिथि : 25 जुलाई, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

एक मस्ज़िद जहाँ गूंजता है गायत्री मंत्र

– अभिनव उपाध्याय, नई दिल्ली

पुरानी दिल्ली की मक्की मस्जिद मेहदियान में होता है सभी धर्मो के धर्मगुरुओं का अनोखा जमावड़ा

इबादत के खास महीने रमजान में जहां हर मस्जिद कुरान की तिलावत (पाठ) की आवाजों से गूंज रही है, वहीं पुरानी दिल्ली के मीर दर्द रोड स्थित मक्की मस्जिद मेहदियान से गायत्री मंत्र भी सुनाई दे तो चौंकना लाजमी है। लेकिन यह हकीकत है। खुराफाती तत्व एक तरफ जहां लोगों को मजहब और जात–पात के नाम पर हिंसा फै लाने के लिए भड़का रहे हैं वहीं राजधानी में अंजुमन अमनदोस्त इंसानदोस्त समिति के लोग भाईचारा बढ़ाने के लिए हर महीने के पहले रविवार को मक्की मस्जिद मेहदियान में सभी धर्मो के धर्मगुरुओं के साथ बैठक करते हैं। बैठक में कोई अपनी बात कुरआन की आयतों के साथ पेश करता है तो कोई रामचरित मानस के दोहे, गायत्री मंत्र या किसी भी अन्य धर्मग्रंथ से। बातचीत का निचोड़ यही है कि सभी एक ही ईश्वर की संतानें हैं, लेकिन पाने के रास्ते अलग हो गए हैं। मस्जिद में बैठक में हिंदू धर्म के महंत कैलाशनाथ हठयोगी, इसाई धर्म के फादर लूका, सिख धर्म के बलविंदर सिंह तथा अन्य धर्मगुरु भी आते हैं। समिति के महामंत्री मोहम्मद बिलाल शबगा बताते हैं कि उनका मकसद देश में मोहब्बत और भाईचारा फैलाना है। बिलाल बताते हैं कि संयुक्तराष्ट्र द्वारा आयोजित अंतर–धार्मिक सदभाव सप्ताह में भी उनके संगठन ने भागीदारी की थी। इस कार्यक्रम का नाम भाईचारा दिवस समारोह रखा गया था। समिति के संस्थापक आरिफ बेग बताते हैं कि समिति तीस साल से लगातार बैठक कर रही है। यह बैठक महीने के तीसरे रविवार को भोपाल में आरिफ बेग के घर भी होती है। इस समिति की शाखाएं देश के अन्य हिस्सों में भी हैं। आरिफ बेग देश में कई समस्याओं के पीछे अशिक्षा को कारण मानते हैं। लेकिन उनका यह भी कहना है कि अब अभिभावक शिक्षा को लेकर जागरूक हैं और सही शिक्षा धर्मो को जोड़ेगी। सत्तर की उम्र पार कर चुके आरिफ बेग को युवाओं से उम्मीद है। – जागरण से साभार

हर मजहब एक खुशबू की तरह है

मेरा मानना है कि मजहब खुशबू की तरह है। कोई मजहब हो बस खुशबूदार बनकर रहे। सभी मजहब अपने हैं और हम सभी मजहब के हैं। हमारा मकसद भारतीय संस्कृति की रक्षा है। भारतीय संस्कृति के तहत हिंदू धर्म में ही यह संभव है कि सौतेली मां के कहने पर राम वनवास चले जाएं और इस्लाम ताकीद करता है कि पड़ोसी भूखा सोता है तो उसकी जिम्मेदारी आप पर है

– मोहम्मद बिलाल शबगा, महामंत्री, अंजुमन अमनदोस्त इंसानदोस्त समिति

मक्की मस्जिद मेहदियान में अंजुमन अमन दोस्त इंसान दोस्त समिति के राष्ट्रीय महामंत्री मो. बिलाल सभा को संबोधित करते हुए।

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक के 4 से 10 जुलाई के अंक में पृष्ठ 4 पर प्रसिद्ध समाज सुधारक तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी का "आओ धर्म की चर्चा करें" शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ है। स्वामी जी ने इस लेख में धर्म के वास्तविक स्वरूप को अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में चित्रित किया है। आज सामान्य जन जीवन में धार्मिकता की भावना की तो अत्यन्त वृद्धि दिखाई पड़ रही है पर गहराई में जाने पर एक भयंकर नैतिक खोखलापन दिखाई पड़ता है। स्वामी जी का यह कथन कि "आइये इस आग की रोशनी में हम कुछ रुढ़िवादी मान्यताओं को चुनौती दें और हम सब मिलकर समाज परिवर्तन के लिए एक धधकता ज्वालामुखी बन जायें।" मैं आशा करता हूँ कि आर्य समाज के लोग स्वामी जी की इस गहरी बात को समझेंगे और उनके विचारों के प्रसारक बनेंगे। आज धर्म का अर्थ मात्र मंदिर बनाना और हर समय लड़ने की बात करना आदि ही लगा रखा है। लेकिन धर्म के वास्तविक स्वरूप से लोग अनजान हैं। स्वामी जी ने अपने लेख में वर्णाश्रम व्यवस्था, यज्ञोपवीत, सहित भारतीय संस्कृति की चर्चा करते हुए व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा की है। तथा अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के हित में जीना और काम करने की ओर अग्रसर करने हेतु विचार व्यक्त किये हैं। स्वामी जी का यह लेख वास्तव में पाठकों को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करेगा और लोग वास्तव में धार्मिक बन सकेंगे।

– रमेश शर्मा, शाहजहांपुर

वैदिक सार्वदेशिक का निखरता हुआ रंग रूप वास्तव में लोगों को आकर्षित कर रहा है। इसमें प्रकाशित लेखों से नये–नये विषयों का ज्ञानवर्धन तथा आनन्द प्राप्त होता है। इस पत्रिका के माध्यम से आर्य समाज के विचारों तथा सिद्धान्तों का प्रसार तो हो ही रहा है यह पत्रिका मानवता के बीज बोने का भी कार्य कर रही है। मैं इस पत्रिका के प्रचार तथा प्रसार के लिए भी संकल्प लेता हूँ। धन्यवाद।

– बाबूराम आर्य, अमरोहा, उत्तर प्रदेश

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

"वैदिक सार्वदेशिक" का स्वतन्त्रता दिवस परिशिष्ट

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी की आर्य समाज कि विश्व विख्यात साप्ताहिक पत्रिका 'वैदिक सार्वदेशिक' 15 अगस्त, 2013 को एक विशेष संस्करण स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट निकालने जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप इसमें देशवासियों के नाम स्वतंत्रता दिवस बधाई का संदेश विज्ञापन के रूप में प्रकाशित करवा सकते है।

भारत के अलावा यह पत्रिका मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, केनिया, फिजी, न्यूजीलैण्ड, अमेरिका, इंग्लैण्ड, कैनेडा आदि देशों में भी पढ़ी जाती है। विज्ञापन से प्राप्त तमाम धन का उपयोग सिर्फ वेदों व वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार पर किया जायेगा।

विज्ञापन दर – कालम साइज 3.5 X 3 इंच के साथ न्यूनतम विज्ञापन फोटो सहित मात्र 4000 रू. में दिया जा सकता है।

कृपया विज्ञापन देने के लिये निम्न फोन नं. व ईमेल पर सम्पर्क करे
दूरभाष : 011.23274771, 23260985, 23367943, 08800614595,
ईमेल: sarvadeshik@yahoo.co.in

वैदिक सार्वदेशिक के आजीवन सदस्यों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, वैदिक संस्कृति का उद्घोषक पत्र "वैदिक सार्वदेशिक" पूरे विश्व में बसे करोड़ें आर्यजनों का लोकप्रिय एवं मार्ग दर्शक पत्र है। हमारा यह निरन्तर प्रयास रहता है कि इस पत्र के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमूल्य विचारों को जन-जन तक पहुँचाया जाये और मानव मात्र को संस्कारित कर "सादा जीवन उच्च विचार" की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाये। इस कार्य में हमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप 20 अथवा उससे अधिक वर्ष पूर्व सभा के मुख पत्र के 200 अथवा 250/- रुपये देकर आजीवन सदस्य बनें थे और तब से लेकर निरन्तर आपको यह पत्र नियमित रूप से भेजा जा रहा है। आपको ज्ञात है कि इस मँहगाई के युग में पत्रिका का प्रकाशन कितना कठिन हो गया है। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि "वैदिक सार्वदेशिक का आजीवन सदस्यता शुल्क जो मात्र 2500/- रुपये है। इसे आप सार्वदेशिक सभा के सहयोगार्थ एकबार पुनः आजीवन सदस्यता के रूप में भेजने का कष्ट करें जो महानुभाव पुराने आजीवन सदस्य हैं उनके लिए विशेष शुल्क मात्र 2000/- रुपये निर्धारित किया गया है जिसे भेजकर कृतार्थ करें। आपका यह सहयोग महर्षि की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में जहाँ आपको सहयोगी बनायेगा वहीं हमें सम्बल भी प्रदान करेगा।

– सम्पादक

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ
महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना
– सत्यार्थप्रकाश का
११ वां समुल्लास
मंगाये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें
मात्र 20 रुपये सहयोग राशि
10 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 50 प्रतिशत छूट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।